परम पूज्य स्वामी गोविंददेव गिरि जी महाराज के उपदेशों एवं प्रवचनों पर आधारित

धर्मश्री

भारतमाता मंदिर (हरिद्वार) की सेवा में समर्पित

धर्मश्री प्रकाशन, मानसर अपार्टमेंट्स, सूर्यमुखी दत्तमंदिर के समीप,
पुणे विद्यापीठ मार्ग, पुणे-४११ ०१६ दूरभाषः (०२०) २५६५२५८९, दूरमुद्रणः (०२०) २५६७२०६९
ईमेल : dharmashree123@gmail.com वेबसाईट : www.dharmashree.org

वर्ष १४ अंक ३ युगाब्द ५११७ त्रैमास सितम्बर २०१५

संपादक मंडल :
संपादक :
डॉ. प्रकाश सोमण
सह-संपादक :
श्री. भालचन्द्र व्यास
मार्गदर्शक :
प्रा. दत्तात्रय दि. काले,
डॉ. संजय मालपाणी
सहयोगी :
पं. अशोक पारीक,
श्री. हनुमान सारस्वत,
श्री. सकाहरि पवार
व्यवस्थापक :
श्री. श्रीवल्लभ व्यास,
श्री. अनिल दातार,
श्री. दत्ता खामकर
डी.टी.पी., मुखपृष्ठ :
जैनको कम्प्यूटर्स, अजमेर
सौ. अंजली गोसावी,
श्री. राहुल मारुलकर, पुणे
मुद्रक :
मंदार प्रिंटर्स,
७५६, कसबा पेठ, पुणे ११.
दूरभाष :(०२०) २४५७६१४२,
२४५७८९४२
mandarprinters@gmail.com

सूचना
पत्रिका में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने व्यक्तिगत विचार हैं। उनसे पत्रिका या संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।
– संपादक

अनुक्रम

४ संपादकीय
५. हरिहर भक्ति महोत्सव २०१५
६. पूर्णयोग बोधिनी गीता
७. परमार्थ-पथ की सबसे बड़ी बाधा ''देहात्म-बुद्धि''
११. बोया पेड़ बबूल का.....
१३. गीता साधना शिविर-२०१५ : एक दृष्टिक्षेप में!
१५. गीता प्रवचन सार
१७. गंगातीरे गीतास्नानम्!
१८. संत गुलाबराव महाराज शताब्दी महोत्सव
२०. संत ज्ञानेश्वर वेदविद्यालय नूतन भवन उद्घाटन
२२. गुरुपूर्णिमा महोत्सव २०१५

गीता परिवार

२५. संगमनेर २६. विभिन्न स्थानों में संपन्न संस्कार शिविर, २८. जयसिंगपुर
२९. लखनऊ, ३१. औरंगाबाद, ३२. आर्वी, ३३. धुलिया, ३४. गुलबर्गा
३५. पुणे, पुष्कर, दिल्ली, ३६. वार्षिक कार्यनिवेदन

✻ आवश्यक सूचना ✻

समस्त लेखकों, गीता परिवार की शाखाओं एवं वेदविद्यालयों से विनम्र निवेदन है कि वे ''**धर्मश्री**'' में प्रकाशनार्थ सामग्री निम्न पते पर भिजवाने का कष्ट करें-

भालचन्द्र व्यास, सह-संपादक, ''धर्मश्री''
व्यास भवन, 209/29, गुलाबबाड़ी, अजमेर- 305007
फोन : 0145-2660498, मो. 09414003498, फैक्स : 0145-2662811
ई-मेल : bhalchandravyas43@gmail.com

धर्मश्री के इस अंक के यजमान
श्रीमान् युगल किशोर एवं सौ. शशिदेवी कोटरीवाल
(कोटरीवाल सेवा निधि) कोलकाता।
साभिनंदन धन्यवाद !

संपादकीय

भारतीय धार्मिक परंपराओंके अनुसार इस वर्ष श्री क्षेत्र नासिक एवं त्र्यंबकेश्वर में सिंहस्थ कुंभ का आयोजन लगभग डेढ मास तक रहा। लौकिक किसी भी लाभ की संभावना के बिना भी पचासो लाख की संख्या में लोगों का कुंभ में आना और निवास करना यही बडा सामाजिक चमत्कार है। देश के विभिन्न क्षेत्रों में प्रचलित और संभावित सामाजिक समस्याओं के एकत्रित चिंतन के लिए अवसर प्राप्त होना भी ऋषियों की ऐसी योजनामें रहा होगा। वैसा कार्य कुछ प्रबुद्ध सांस्कृतिक संगठनों के द्वारा तथा संत-महंतों द्वारा भी अवश्य किया गया। पर इससे भी अलग एक बात की ओर हमारा ध्यान जाना चाहिए। देश के हर कोने से, हर जाति के, हर भारतीय संप्रदाय के विद्वान्-अविद्वान्, संपन्न-विपन्न, छोटे बालकों से-वयस्क वृद्धोंतक हर आयु के लोगों का इतनी भारी संख्या में मास-डेढ मास तक आना-जाना-रहना यह कैसी अद्भुत समरसता है! इतने विभिन्न गुटों का इतने समयतक अभिसरण क्या छोटा चमत्कार है? मेरी दृष्टी में संपूर्ण भारतीय संस्कृति की एकता का और एकता में विविधता का दर्शन करना हो तो कुंभ ही सर्वोत्तम अवसर है। इस एकता के अहसास से हर राष्ट्रप्रेमी के नेत्र कृतार्थ हो जाते हैं।

ऐसे ही अनेकविध आयोजन के फलस्वरुप असंख्य आक्रमण एवं आपदाओं को झेलकर भी भारतवर्ष न केवल स्वाभिमान से खडा रहा बल्कि, २१ जून को पूरे विश्व के द्वारा योगदिवस मनाया जाने का अर्थ ही यह है कि, विश्वगुरु के पद की ओर लगातार बढता हुआ उस गौरव के सन्निकट आ पहुँचा है। योग शब्द से आंशिक मात्रा में पतंजलि और पूर्ण रूप से भगवद्गीता का बोध होता है। पूरा विश्वमानस अब भगवद्गीता के स्वीकार से भारत की आध्यात्मिक श्रेष्ठता को मान्यता प्रदान कर रहा है।

यही भविष्यवाणी समन्वय महर्षि संत श्री गुलाबराव महाराजने लगभग एक शतक पूर्व की थी कि ''गीता पूरे संसार का विश्वमान्य ग्रंथ बनेगा और भारतवर्ष निश्चित रूप से परमसमृद्ध विश्वगुरु के रूप में महान होगा''। इस सिद्ध संत का पंचदिवसीय शताब्दि महोत्सव श्रीधाम वृंदावन में सोत्साह मनाया गया और इसी अवसरपर वहाँ संत ज्ञानेश्वर विद्यालय के नूतन भवन का उद्घाटन हुआ जो इस अंक में पठनीय है। प्रतिष्ठान एक से एक शिखरपर बढ रहा है। जैसा कि वेद भगवान ने कहा, - **यत् सानो: सानुमारुहत।**

इस पवित्र कार्य में अनगिनत हाथ कार्य कर रहे हैं। सभी का हार्दिक अभिनंदन!!

दीपावलि शुभचिंतन

तमांसि भूयांसि निवारयन्ती । श्रेयांसि तेजांसि समुद्गिरन्ती।
उल्लासयन्ती नितरां मनांसि । दीपावलिर्वस्तनुताद् यशांसि ।।

भारतीय राष्ट्र एवं अखिल विश्व के लिए मंगलमय दीपावलि की हार्दिक शुभकामना!

श्री हरिहर भक्ति महोत्सव - २०१५

प्रतिवर्ष गंगामैय्या के पावन तट पर स्वर्गाश्रम की पुण्यस्थली में नियमित रूप से आयोजन होनेवाला श्री हरिहर भक्ति महोत्सव महाराष्ट्र के भाविक भक्तों के विशेष आग्रह से इस वर्ष श्रावण कृष्ण प्रतिपदा से अमावस्या तद्नुसार दि. १ अगस्त से १५ अगस्त तक महाराष्ट्र के श्री क्षेत्र देवगड जिला अहमदनगर में अतीव उत्साह के साथ सानन्द संपन्न हुआ। उसके पूर्वदिन दि. ३१ जुलाई २०१५ को गुरुपूर्णिमा निमित्त महर्षि वेदव्यास एवं संत ज्ञानेश्वर महाराज का पूजन औरंगाबाद शहर में उल्लास के साथ संपन्न हुआ। श्री क्षेत्र देवगड का श्री दत्त संस्थान यह आश्रम पुण्य सलिला अमृतवाहिनी प्रवरा नदी के तट पर विद्यमान एक अग्रगण्य आदर्श देवस्थान है। वहाँ के पीठाधिपति ह.भ.प. परम श्रद्धेय पू. श्री भास्कर गिरि जी महाराज महाराष्ट्र के सर्वसम्मानित आदर्श धर्माचार्य हैं, जो आरंभ से ही राष्ट्र जागृति एवं समाज सेवा के विभिन्न उपक्रमों में अग्रसर रहे हैं। गोवत्स पू. श्री राधाकृष्णजी महाराज भी कुछ दिन इस उत्सव में सहभागी रहे। परिणामत: अब तक के सभी भक्तिमहोत्सवों को पीछे छोडता हुआ यह उत्सव अभूतपूर्व हो गया। श्रोताओं की संख्या ४–५ हजार से आरंभ होकर अंतिम दिन लगभग ११–१२ हजार तक पहुँच गयी। १५ दिनों में कुल मिलाकर अन्नदान लगभग ७५–८० हजार लोगों का हो गया। इस उत्सव के प्रणेता श्री. चंद्रकांतजी केले काका श्रीमद्भागवत कथा के दोनों यजमान श्री श्यामसुंदरजी श्रीनिवासजी राठी (औरंगाबाद), एवं सौ. अर्चना नितिनजी तोतला (जालना) तथा प्रमुख कार्यकर्तागण पं. श्री. विजयकुमारजी पलोड, सौ. पद्माजी तापडिया, श्री जयप्रकाशजी बिहाणी, श्री. सीतारामजी मंत्री, श्री. सतीशजी साबू, श्री. सत्यनारायणजी जाजु, श्री. दीपकजी लड्डा, डॉ. द्वारकादासजी लड्डा, परम वैष्णव श्री नारायणदासजी मारू आदि सभी का प्रभूत सहयोग रहा। भगवान श्री दत्त प्रभु की कृपा से संपन्न इस अनूठे अद्वितीय महोत्सव का सचित्र विवरण दत्त जयंती के पावन पर्व पर अगले अंक में देना ही औचित्यपूर्ण लगता है इसलिए कृपया उसकी प्रतीक्षा करें।

– संपादक

विशेष सूचना :– *१ जनवरी २०१६ से धर्मश्री का यह अंक महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान, संत श्री ज्ञानेश्वर गुरुकुल, श्रीकृष्ण सेवा निधि एवं गीता परिवार के विशेष दानदाता तथा धर्मश्री अंक के सशुल्क सदस्यों को ही भेजा जायेगा। दीक्षार्थी भाई बहनों को तथा अन्य कुछ महानुभावोंको अब तक मिलनेवाली यह पत्रिका वे उपरोक्त श्रेणी में कहीं होंगे तो ही प्राप्त होगी । इसलिए उपरोक्त श्रेणीयों में कहीं ना कहीं समाविष्ट होने का कर्तव्य उन्हें निभाना चाहिए। तदर्थ सशुल्क सदस्यता पंचवार्षिक रु. ५००/- 'श्रीकृष्ण सेवा निधि' इस नामसे धर्मश्री (पुणे) कार्यालय के पतेपर भेजें।*

– संपादक

पूर्णयोगबोधिनी गीता

– प.पू. स्वामी गोविंददेव गिरि जी महाराज

- गीता ही एकमात्र ऐसा ग्रंथ है जो योग का समग्र ज्ञान करा सकता है। अन्य सभी ग्रन्थों ने केवल कुछ अंगों का प्रतिपादन किया। इसलिए 'पूर्णयोगबोधिनी' यह विशेषण गीता के लिए यथार्थ है।
- गीता के इस योगप्रतिपादकत्व के कारण, २१ जून को संपन्न हुआ 'योग दिन' वास्तव में 'वैश्विक गीता दिन' ही है। गुलाबराव महाराज कहा करते थे कि एक ना एक दिन पूरा विश्व गीता की शरण में आएगा उनका स्वप्न अब साकार हो चुका है। अर्जुन भगवान का सबसे अधिक प्रिय सखा है। इसीलिए भगवान ने खांडवनन-दहन प्रसंगोपरांत अग्नी से केवल इतनी ही याचना की, कि 'पार्थ से मेरा प्रेम बना रहे।' अर्जुन से इतने लगाव के कारण ही भगवान ने अपने मन की सारी बातें उसके संमुख प्रस्तुत कर दी।
- अर्जुन भगवान के प्रिय है क्योंकि वे सद्‌गुणसंपन्न है। जीवन में सद्‌गुणों की साधना अखंड चलनी चाहिए। एक ना एक दिन उसका मूल्यांकन अवश्य होगा।
- गीता में भगवान के लिए 'योगेश्वर/महायोगेश्वर' ऐसे विशेषणों का प्रयोग किया गया। गीता में भगवान ने योगी बनने का ही उपदेश किया। और केवल योगी बनने को नहीं कहा अपितु योगी बनकर कर्म करने को कहा। **योगस्थ: कुरु कर्माणि।**
- योगी तो जब बनेंगे तब बनेंगे, पहले एक-दूसरे के सहयोगी तो बनें।
- गीतादिक हमारे धर्मशास्त्रों के कारण ही इतने आक्रमणों के उपरांत ही हमारा धर्म अडिग रहा। हमारे धर्म की विशेषता यह है कि दर्शनशास्त्र भी इस में समाविष्ट है। विश्व में अन्यत्र यह देखने को नहीं मिलेगा। हमारे धर्मशास्त्र में बुद्धि की उपेक्षा कभी नहीं की। आद्य शंकराचार्यजी ने कहा–

  को दीर्घरोगो? भव एव साधो
  किमौषधं तत्र? **विचार** एव।

  'लक्षणप्रमाणाभ्यां' वस्तुसिद्धिः यह बुद्धि का प्रशिक्षण है।

  You must have a proper disipline of thinking and then you can proceed.
- जहाँ बुद्धि चलानी चाहिए वहाँ अगर नहीं चलाई तो संशय उत्पन्न हो सकता है। हमारे शास्त्रकार बुद्धि की महत्ता भी जानते हैं और मर्यादा भी।
- बुद्धि से परमात्मा नहीं जाने जा सकते इतना जानने के लिए तो भी बुद्धि चलाना आवश्यक है।
- सगुण परमात्मा की आराधना करने वाला सबसे बुद्धिमान होता है ऐसा गुलाबराव महाराज ने कहा। रमण महर्षि भी यहीं कहते हैं, ''जब तक मैं शरीर हूँ यह भाव किंचित भी शेष है तब तक मूर्तिपूजा करते रहें।''
- अंततोगत्वा निष्कर्ष इतना ही निकलता है कि भगवान् को केंद्र में रखाकर सद्‌गुणों का विकास करते रहे, वहीं भक्ति है।

  ""Day by day in every way
  I shall become better and better"
- भक्ति परिपूर्ण और स्वतंत्र साधन है। उसका आलंबन कभी छूटना नहीं चाहिए। तुकाराम महाराज ने कहा–

  'न मिलो खावया। न वाढो संतान।
  परी हा नारायण। कृपा करो।।'

  (चाहे खाने को भी न मिले, चाहे पुत्रादिक न फल-फूल पाएं किंतु नारायण की कृपा मिलती रहे।)

योगवासिष्ठ (१०)

परमार्थ-पथ की सबसे बड़ी बाधा
''देहात्म-बुद्धि''

मोक्षप्राप्ति मनुष्य जीवन का परम लक्ष्य तथा पुरुषार्थ है। वस्तुतः मानव देह इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए मिलता है। मोक्षरूपी मंदिर में पहुँचने के लिए चार प्रमुख द्वारपालों (शम अर्थात् चित्त वृत्तियों का शमन, इन्द्रियों का भली प्रकार निग्रह, उच्च भावों एवं विचारों से ओतप्रोत रहना, जो कुछ जितना भी, जैसा भी प्राप्त हो, उसमें संतोष करना और सत्य की चलती-फिरती, हंसती-बोलती देवतुल्य संत मूर्तियों का संग-सहवास) का विशद विवेचन पाठक विगत अंकों में धारावाहिक रूप से पढ़ चुके हैं। अब परमार्थ-पथ पर चलने में आने वाली एक बड़ी बाधा ''देहात्म-बुद्धि'' (देह को ही अपना सच्चा स्वरूप समझ कर भ्रम जाल में उलझे रहना) इस विषय पर पढ़िये प.पू. गुरुदेव की तात्त्विक व्याख्या।

बात एक कथा से आरम्भ करते हैं। काशी में लोग भांग पीते हैं। भांग पहले घोटी जाती है, फिर 'चढ़ाई' जाती है। भांग एक पात्र से दूसरे पात्र में डालते हैं। जितनी ऊपर से उसकी धार गिरेगी, उतना ही भांग का नशा अधिक चढ़ता है। उसे भांग चढ़ाना बोलते हैं। ऐसी ही चढ़ी हुई भांग दो पंडितों ने पी ली। उन्हें अच्छा-खासा नशा चढ़ गया। उसी स्थिति में वे गंगाजी के किनारे आ गए। रात हो गई थी। चांदनी के प्रकाश में उन्हें एक नाव दिखाई दी। दोनों नाव पर सवार हो गये। नाव में चप्पू भी मौजूद थे। एक ने कहा, ''चलो, यहाँ चप्पू भी हैं, हम ही नाव चलाएँगे और उस तीर तक चले जाएँगे''। दूसरे ने कहा, ''ठीक है, तुम और मैं दोनों चप्पू चलाएँगे। इससे हम जल्दी पहुँचेंगे।'' दोनो नाव में बैठ गए और जोर-जोर से चप्पू चलाने लगे। भांग के नशे में थे। चप्पू चला रहे थे। रात भर चप्पू चलाते रहे। सवेरा होने को आया। पौ फट गई। प्रातःकाल की शीतल बयार बहने लगी। धीरे-धीरे भांग का नशा उतरा। दोनों ने एक-दूसरे से कहा, ''अरे! हम रातभर चप्पू चलाते रहे, परंतु हम तो उसी घाट पर जैसे के तैसे ही हैं। ऐसा कैसे हो गया?'' दूसरे का नशा अधिक उतरा था। उसने कहा, ''अरे! नाव तो घाट के खूंटे से ही बंधी हुई है। हम तो उसे खोलना ही भूल गए। नाव आगे कैसे बढ़ती?''

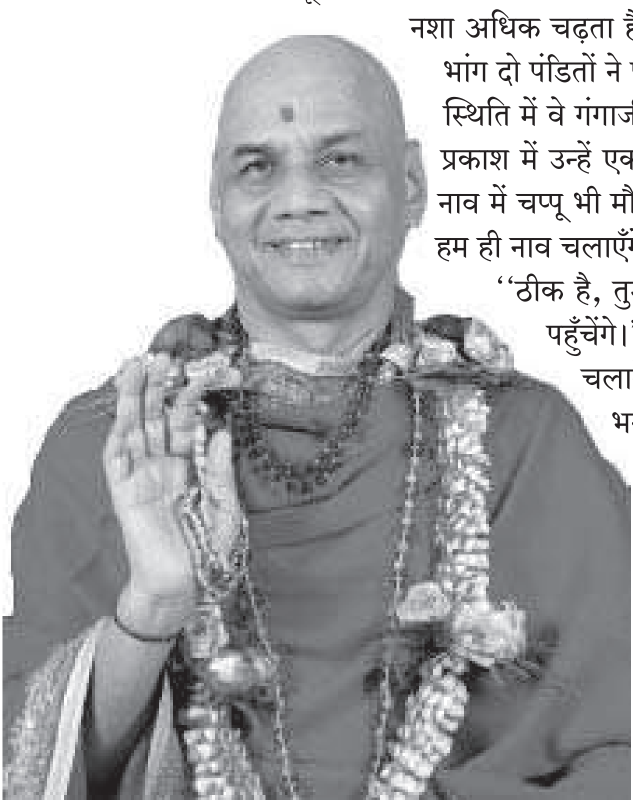

हमें उन पंडितों पर हँसने का अधिकार नहीं है; क्योंकि हम भी तो वही करते हैं। हम भी खूब परिश्रम करते हैं, जप करते हैं, देवताओं का अर्चन करते हैं, दान-धर्म करते हैं, परंतु ये सब करते समय हम यदि **'देह'** से बंधी बुद्धि की डोर न छोड़ें, तो सब कुछ करते हुए भी हम जहाँ के तहाँ ही रह जायेंगे। जीवन भर खूब परिश्रम किया, परमार्थ में बड़े वेग से चप्पू चलाए, परंतु डोर नहीं छोड़ी इसी कारण हमारी प्रगति नहीं हुई।

क्या है देहबुद्धि :-

'देह ही मैं हूँ। जो इंद्रियगम्य है, वही प्रत्यक्ष है। जो प्रत्यक्ष है, उसे ही मानना चाहिए। जीवन सुख से जीना चाहिए। सारे इंद्रिय-सुखों को भोग लेना चाहिए। देह भस्मीभूत होने पर सब कुछ समाप्त हो जाता है। इसलिए जरूरत पड़े तो ऋण ले लो, परंतु घी अवश्य खाओ। मजे में जीओ। देह के भस्म होने पर काहे का पुनर्जन्म?'

ऊपर-ऊपर से विचार करने पर चार्वाक के उपरोक्त तर्क अच्छे लगते हैं, उचित भी लगते हैं। जन्म और मृत्यु देह के ही होते हैं। देहधारण के पूर्व और देहपतन के बाद 'जीवन' नाम की कोई भी वस्तुस्थिति प्रत्यक्ष नहीं होती है। सारे सुख-दुःख इंद्रियों के स्तर पर ही तो होते हैं। इंद्रियों में खराबी आ जाए या वे अक्षम हो जाएँ तो उतनी मात्रा में 'सुख' का अनुभव नहीं आ सकता। इस स्थिति में यदि 'देह ही मैं हूँ' मानूँ तो उसमें अनुचित क्या है? **'देह ही मैं हूँ'** इस तत्त्व को मान लेने पर 'मान-अपमान' इन शब्दों के कोई मायने ही नहीं रह जाएँगे। अपमान किसका होता है? देह का होता है? कोई हमसे कहे, ''तुम हमेशा चाय के समय ही कैसे आते हो? ठीक है, अब आ ही गए हो, तो पी लो।'' ऐसा कहने पर क्या कोई वहाँ चाय पीएगा? देह की या इंद्रियों की दृष्टि से देखा जाए तो इन बोलों से चाय की शक्कर कम नहीं हुई। जीभ को वही स्वाद मिल सकता है। परंतु मैं चाय नहीं पीता, क्योंकि मुझे 'अपना' अपमान सहकर 'देह पुष्ट नहीं करनी है।' इसके माने यही हुआ कि यह बोलने वाला 'मैं' देह नहीं, इससे भिन्न है।

देहबुद्धि के विविध रूप :-

देहबुद्धि बड़ी चीपड़ होती है, छूटे नहीं छूटती, टूटे नहीं टूटती! वह है 'बहुरूपी'। अनेक रूप लेकर आती है। कितनी ही बार तो बात हमारे ध्यान में भी नहीं आती। कुछ लोग दान करते हैं। बड़ी-बड़ी संस्थाएँ खड़ी करते हैं। यह तो अच्छी बात है। परंतु स्कूल के लिये दान देते समय उनका आग्रह रहता है कि 'विद्यालय का पहला नाम बदल डालिए, उसे हमारा नाम दीजिए', यह कहने वाली कौन होती है? 'देह-बुद्धि' ही होती है। ऐसे दान से समाज का तो भला होगा, परंतु व्यक्ति की यही 'देहबुद्धि' उसकी पारमार्थिक प्रगति को रोक देगी।

कुछ लोग बड़े-बड़े उद्योग लगाते हैं। विश्व के प्रमुख धनवानों में उनकी गिनती होती है। उनके उद्योग की ख्याति इतनी प्रचंड होती है कि उन्हें पलभर के लिए भी फुरसत नहीं मिलती। इस उद्योग से एवं धनसंग्रह से राष्ट्र का, समाज का एवं उनके अपने परिवार का भला भी होता है, परंतु इसके माने ये होते हैं कि इस उद्योगपति ने अपने मन में तीन ही पुरुषार्थ माने हैं - काम, अर्थ एवं धर्म! अपनी 'कामना-पूर्ति' के लिए 'अर्थ' चाहिए। अर्थोपार्जन से अपना एवं समाज का हित ही साधा जाता है, अतः 'अर्थ-प्राप्ति' ही धर्म है। 'धर्मस्य मूलं अर्थः।' यही उनके जीवन का मूलमंत्र बन जाता है। जीवन के सारे अंग-उपांग अर्थ-समृद्धि के बिना नहीं खिल सकते, इसी कारण 'धनं-जय' होना ही 'धर्म' है। 'सभी कार्यों का मूल्य रुपयों में होना चाहिए', आजकल सर्वत्र यही दृष्टिकोण है। इन दिनों 'ज्ञानदान' भी एक 'धंधा' बन गया है।

इसी तरह 'डॉक्टरी व्यवसाय' भी एक धंधा बन गया है। आवश्यकता हो या न हो, शल्य-चिकित्सा (ऑपरेशन), क्ष-किरण (एक्सरे) चिकित्सा, खून की जाँच आदि होनी ही चाहिए; क्योंकि ऐसा न करें तो रोगी को लूटेंगे कैसे?

कुछ लोग त्याग करते हैं। परंतु वह भी उनका 'पूंजी' लगाना होता है। दूसरों के लिए पहले थोड़ा-सा त्याग करना और बाद में मैंने तुम्हारे लिए यह किया, इतना किया, इसकी याद दिलाते हुए उसे निरंतर नोंचते रहना।

शरीर-केन्द्रित विचार प्रणाली!

कुछ लोग पूजा-पाठ करते हैं, व्रत रखते हैं, अनशन करते हैं, ब्राह्मण, सुहागनों को भोजन देते हैं, दक्षिणा देते हैं – परंतु इन सारे 'यज्ञ-कर्मों' से अपनी कोई न कोई कामना पूरी हो, इस आशय का संकल्प पहले ही रख लेते हैं। यह कामना थी कि "मेरा, मेरे परिजनों, मेरे पशु-पक्षी, धन आदि सभी का सभी प्रकार से क्षेम हो"। याने "मैं-मेरे की याद, अंत:करण भूलता नहीं है।" इसी कारण इस पूरे सकाम धर्म-कृत्य को 'देहबुद्धि' ही कहना चाहिए। वह 'डोर' हम नहीं छोड़ते, उससे बंधे ही रहते हैं। कुछ लोग तपस्या करते हैं, जिसका निर्माण अनेक बार तीव्र अहंकार से होता है। हिरण्यकशिपु ने वरदान मांगा था, "मुझे घर में मृत्यु न आए, घर के बाहर भी न आए, मुझे दिन में मृत्यु न आए, रात में भी न आए, मुझे पृथ्वी पर मृत्यु न आए, आकाश में भी न आए। मुझे मनुष्य न मारे, पशु भी न मारे।" भगवान ने नृसिंह अवतार लेकर इन सारी शर्तों का पालन करते हुए उसको मार डाला। इतनी तपस्या करके उसने क्या माँगा? अपनी देह की अमरता माँगी। याने अपनी देहबुद्धि बनाए रखने के लिए ही उसने तपस्या की एवं वरदान माँगा।

> विवेक और वैराग्य दोनों मिलकर 'योग' बनता है। विवेक के द्वारा मन से अलिप्त बनना है। वैराग्य से प्रपंच दूर रखा जाता है। इस प्रकार अन्तर्बाह्य मुक्त होना याने योगी बनना! जो मुख से ज्ञान की बातें करता है; उसका आचरण भी तदनुसार ही होना चाहिए। इसी कारण हम कहते हैं कि 'विवेक' और 'वैराग्य' माने ज्ञान और अलिप्तता!

कुछ लोग मद्य-पान करते हैं, 'परंतु यह हमारा व्यसन है', यह बात वे कभी कबूल नहीं करते। उसे कुछ अच्छे से मनभावन नाम दिए जाते हैं। कभी कहते हैं 'यह तो शिष्टाचार है।' 'कोई हमें ऑफर करे तो हम ना कैसे कर सकते हैं?' 'एटिकेट्स', 'मेनर्स' कुछ होते हैं या नहीं? – इसलिए पीते हैं। कभी 'हाई सोसायटी में रहना हो तो पीना ही पड़ता है' – यों कहते हैं। कुछ लोग कहते हैं "पीने का व्यसन बुरा ही होता है, परंतु नियमितता से छोटा सा 'पेग' लेना हितकारी होता है। हम पीते हैं, परंतु हमें पीने का व्यसन नहीं है।"– बहाना कुछ भी हो। पीते हैं, यह सत्य है। पीने का समय हो जाने पर इंद्रियाँ याद दिलाती हैं। यह सब 'देहबुद्धि' का काम है। हम इंद्रियों को आदेश नहीं देते, इंद्रियाँ ही हमें वहाँ खींचे ले जाती हैं। **(इंद्रियाणि प्रमाथीनि हरन्ति प्रसभं मन:।)** यही है देहबुद्धि।

कैसे छूटे ये देहबुद्धि? :–

यदि हमें अन्दर से ऐसे लगता है कि हमारी देहबुद्धि छूटनी ही चाहिए तो हम किस दिशा में प्रयत्न करें? उस पर भी थोड़ा चिंतन करना आवश्यक है। "मैं, मैं" – इस "मैं" की महिमा अनेक बार देहबुद्धि से बढ़ती है। **उसके लिए एक बड़ा ही सरल किन्तु प्रभावकारी उपाय है, 'सद्गुरु की शरण जाना'।** किसी महात्मा के सामने हम नतमस्तक हों! किसी के तो चरणों पर यह "मैं-पना" समर्पित करें। गुरुकृपा ही देहबुद्धि त्याग के लिए उत्कृष्ट साधन है, रामबाण उपाय है। समर्थ रामदास कहते हैं, "शिष्य से न कराए साधन, न कराए इंद्रियदमन। ऐसे गुरू धेले के तीन मिले तो भी न करें।" इसका मतलब यह हुआ कि जो गुरु 'साधना' कराता है, 'इंद्रियदमन' कराता है, वही सच्चा गुरू है। इस साधना से धीरे-धीरे देहबुद्धि क्षीण हो जाती है। इसका अर्थ यह नहीं कि हम सब कुछ गुरू पर ही छोड़ दें और खुद हाथ झटक कर खड़े रहें। गुरू मार्गदर्शन करेंगे, परंतु साधना तो हमें ही करनी है। गुरू से मंत्रोपदेश मिला। साधना का

प्रारंभ हो गया। अब हृदय से, दृढ़ निश्चय से, नियमितता से साधना करनी चाहिए।

कुछ लोग प्रश्न करते हैं कि ''गुरुमंत्र प्राप्त होने के बाद कितने दिन, कितने महीने साधना करनी पड़ती है?'' वास्तव में उनके मन में यह भाव होता है कि गुरुपदेश प्राप्त करने पर तुरंत ही साक्षात्कार हो जाए। परंतु वैसा नहीं होता। हरेक की साधना की अवधि भी भिन्न-भिन्न हो सकती है। कुछ लोगों को एक या डेढ़ तप याने बारह-अठारह वर्ष साधना करनी पड़ती है; तो कुछ लोगों की साधना एक सप्ताह में ही फलीभूत हो सकती है। हर एक साधक की आध्यात्मिक तैयारी भिन्न होती है न! चित्त शुद्ध होना चाहिए। इस चित्त पर कितने धब्बे लगे हैं, अनेक जन्मों के – वे सब धुल जाने चाहिए! – कुछ लोगों की साधना पूर्वजन्म में हुई होती है। उन्हें 'बचपन' में ही सर्वज्ञता प्राप्त हो सकती है। वहाँ 'उम्र की भी प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ती।'

गुरु से मंत्रोपदेश प्राप्त करना मानो बीज बोना होता है। बीज उत्कृष्ट होना चाहिए। जमीन भी उत्कृष्ट होनी चाहिए। और एक बात है – वर्षा समय पर एवं जितनी चाहिए उतनी होनी चाहिए। वह तो अपने बस की बात नहीं है। **'खेत' है साधक की तैयारी! 'बीज' है मंत्रोपदेश। और वर्षा है भगवत्कृपा!** वह तो अपने बस की बात नहीं है। हम प्रार्थना करने के सिवा और कर भी क्या सकते है? कृपा करना उसकी मर्जी की बात है। यह है प्रयत्नवाद की दिशा।

> वैराग्य न हो और ज्ञान की बक-बक की तो वह भी व्यर्थ ही है। कोई कारागृह का बंदी पराक्रम की कथाएँ सुनाने लगे। स्वतंत्र, मुक्त जीवन कितना आनंदमय होता है; यह बताने लगे, तो उसमें क्या तुक है? वैसे ही होता है विषयों, गृहस्थी के बंधन में जकड़े लोगों का मोक्ष-प्रतिपादन! ऐसी पुरुषार्थ की बातें उसके मुँह से निकलने पर हास्यास्पद ही बन जाती हैं। वैराग्य के बिना ज्ञान भी व्यर्थ ही है। ऐसे व्यक्ति की ज्ञानपूर्ण बक-बक याने कुत्ते का भौंकना!

विवेक और वैराग्य :-

परमार्थ के मार्ग पर साधक को खुद ही चलना पड़ता है। सद्गुरु मार्गदर्शक अवश्य होते है; परंतु चलना तो साधक को ही है। इस यात्रा में जिन गुणों की आवश्यकता होती है, वे हैं 'विवेक एवं वैराग्य'। 'विवेक एवं वैराग्य', ये शब्द हैं समर्थ रामदास जी के। योगसूत्र में कहा है, **''अभ्यासवैराग्याभ्याम् तन्निरोधः''।** श्रीगीता भी 'अभ्यास एवं 'वैराग्य' शब्दों का ही प्रयोग करती हैं। एक दृष्टि से देखा जाए तो **'विवेक वैराग्याभ्याम् तन्निरोधः**' समर्थ सूत्र है। उन्होंने इस पर बड़ा ही मार्मिक भाष्य किया है। विवेक और वैराग्य पर किया गया समर्थ रामदास स्वामी का चिंतन बड़ा श्रवणीय है। (दशक १२, समास ४)। वे कहते है, ''वैराग्य का मन में निर्माण होना बड़े ही भाग्य की बात है, परंतु यदि विवेक न हो तो वह व्यर्थ ही होगा। भाग्य तो मिल गया पर उसका भोग कैसे लें, इसकी अक्ल नहीं है। क्या फायदा है भाग्य मिलने का? वैराग्य क्या है? गृहस्थी में दुःखी होना, संसार में आने वाले नाना संकटों से उद्विग्न होकर सब कुछ छोड़-छाड़कर गृहत्याग करना, उठक-पटक, चिड़-चिड़ापन, क्रोध का तात्पर्य वैराग्य नहीं। विवेक के बिना सर्वस्व का त्याग करना मूर्खता ही है। केवल वैराग्य तो 'हेंकाड़पिसे' पागलपन। 'हेंकाड़पिसे' (समर्थ रामदास जी का शब्द है) याने सनक, पागलपन। केवल वैराग्य याने गृहस्थी छोड़ दी, व्यवहार छोड़ दिया, काम, व्यवसाय छोड़ दिया, याने न परमार्थ किया न गृहस्थी की।

वैराग्य न हो और ज्ञान की बक-बक की; तो वह भी व्यर्थ ही

...शेष पृष्ठ १७ पर

जीवन की पाठशाला

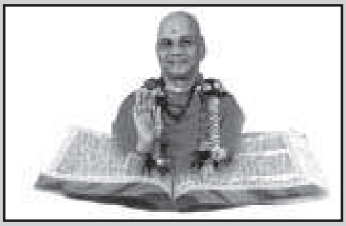

बोया पेड़ बबूल का.....

इस संदर्भ में आप विश्वास कीजिए कि आप जैसा बोएँगे वैसा पाएँगे; क्योंकि दुनिया में नियति का या कर्म का कानून बहुत ही कठोर होता है। इस संसार का सबसे महत्त्वपूर्ण और पहला नियम है कि मनुष्य कहीं भी, कभी भी; जो अच्छा या बुरा कर्म करता है, उसका परिणाम उसे कहीं न कहीं, कभी न कभी, किसी भी समय भुगतना ही पड़ता है।

एक बात कहने में मुझे कोई आपत्ति नहीं है। परसों मैं एक शहर में व्याख्यान देकर घर लौट आया। घंटे भर बाद मेरे घर में एक दूरभाष (फोन) आया। दूरभाष पर बात करने वाला व्यक्ति बहुत ही अमीर, प्रौढ़ तथा होशियार है। वह एक प्रतिष्ठित व्यक्ति है, फिर भी बोलते समय रो रहा था और रोते-रोते अपने मन की बात कह रहा था, ''महाराज, मैंने आपके प्रवचन सुने। दो दिन से मेरा मन दुःख और पश्चाताप की आग में झुलस रहा है। कई साल हुए, मैंने अपने भाई पर मुकदमा दायर किया था और वह केस मैं अदालत में लड़ रहा हूँ। लेकिन आज मुझे इस बात के लिए बहुत दुःख हो रहा है। मुझे ऐसा लग रहा है कि मैंने बड़ी भारी भूल की है। आप मुझे आशीर्वाद दीजिए। मैं कल ही कचहरी जाऊँगा और मेरे भाई पर जो नालिश दायर की है, वह करोड़ो रुपयों का केस, अब वापस ले लूँगा।'' मैंने कहा, 'भगवान आपका भला करे।'

यदि कोई मन में ऐसा सोचता हो कि मैं अपने स्वभाव को नहीं बदल सकता, तो ऐसा सोचना ही गलत है। मुझे आप यह भरोसा दिलाएँ कि आप अपने मन पर विजय पाने में सफल होंगे– मैं अपने स्वभाव को सुधारने की कोशिश करूँगा। मैं लोगों को क्षमा करूँगा और ज्यों ही आप अपने मन में यह निश्चय करेंगे, आपके अंतरंग से अपने आप शांति के, आनंद के फव्वारे फूट पड़ेंगे।

यदि हम किसी को क्षमा नहीं कर सकते, किसी से प्रेम नहीं कर सकते तो इसका क्या परिणाम होगा? अमेरिका एक बहुत ही संपन्न देश है। लेकिन दुर्भाग्य यह है कि उसी समृद्ध अमेरिका में आत्महत्याओं की संख्या विश्व के अन्य देशों की तुलना में कई गुणा अधिक है। वे क्यों मरना चाहते हैं? कारण बहुत ही मामूली होते हैं। कहीं आर्थिक निराशा से मनोभंग आत्महत्या का कारण बन जाता है तो कही प्रेम में असफलता। प्रेम की स्निग्धता का अभाव महसूस किया जाता है। इस कुविचार को रोकने वाला कोई नहीं मिलता और झट आत्महत्या का सहारा लिया जाता है। जीवन इतना शुष्क क्यों बन जाता है? उसका एक ही कारण है, प्रेम की स्निग्धता का अभाव।

जरा सोचिए तो कि हमारे वृद्ध माता-पिता हमसे क्या चाहते हैं। अपनी संतान से माता-पिता धन की अपेक्षा शायद ही करते हों। वे सिर्फ प्रेम चाहते हैं। उनकी अपेक्षाएँ बहुत ही सीमित होती हैं। इतनी भर इच्छा होती है कि कभी न कभी और खासकर बीमारी की अवस्था में बहू-बेटे हमारे पास बैठें, प्यार से हमारी पूछताछ करें। एकाध सेवक रखकर हमें चाय मिल सकती है; किंतु सेवक के हाथ की चाय पीने में वह सुख संतोष कहाँ, जो अपनी बहू के हाथ से पिलाई गई चाय से मिलता है। यह विचार हमारे मन को सुख पहुँचाता है कि कोई तो मुझसे प्रेम करता है, कोई तो मेरी राह देखता है। जरा बताइए तो कि आप बीमार हैं और आपको किसी ने पूछा नहीं तो आपको कैसा लगेगा? जितना बुरा युवावस्था में हमें लगता है उससे

कई गुना अधिक बुरा वृद्धावस्था में लगता है। इसका कारण यह है कि युवावस्था में हम दूसरों के लिए बहुत काम करते हैं, लेकिन वृद्धावस्था में ऐसी स्थिति नहीं होती है। उस समय हमने बहुतों के लिए बहुत कुछ किया हुआ होता है। फिर भी, समय आने पर शायद ही कोई हमारे काम आता हो। हमारे मन में अपने आप यह विचार आता है कि हमने दूसरों के लिए इतने कष्ट क्यों झेले?

यह बात अच्छी तरह गाँठ बाँध लें कि पुरानी पीढ़ी के लोगों के मन में ऐसे विचार थोड़े विलंब से ही आते हैं, किंतु जो युवा माँ-बाप हैं, उनको अभी से सजग हो जाना चाहिए। अपने-अपने सास-ससुर को लोकलज्जा के कारण ही सही, पाँच-दस साल तो अपने पास रखकर उनकी देखभाल की होगी। किंतु आपके लड़के अब बड़े बन गए हों और उन्होंने पश्चिम की किसी नखरैल लड़की से शादी की हो, तो घर आकर वे कहेंगे 'माँ, अब तुम घर से कहीं बाहर जाओ, हम तुम्हारे साथ नहीं रह सकते। देखो (Mom, please get out, we can't adjust) देखो तो सही कि कितने सुंदर वृद्धाश्रम बाहर बनाए गए हैं। तुम्हें चाहे जितने पैसे हम प्रति मास भेजते रहेंगे। क्या तुम्हें यह मंजूर है? यह सुनकर क्या आपको यह प्रस्ताव अच्छा लगेगा?

हर रोज सवेरे जरा जल्दी जाग उठिए और उक्त समस्या के समाधान का गृहपाठ (Homework) करें। जरा कल्पना कीजिए कि आपके लड़के ने अंतर्जातीय विवाह किया है और वह एक पाश्चात्य रंग में रंगी हुई बहू घर ले आया हो और घर में कदम रखते ही उस नवोढ़ा ने अपने पति अर्थात् आपके पुत्र से कहा कि तुम अपने बूढ़े माँ-बाप को घर से बाहर निकालो और बेटे ने आपको किसी वृद्धाश्रम में भेजने की तैयारी शुरू की हो, तो अनुमान लगाइए कि उसका ऐसा व्यवहार आपको कैसा लगेगा? यदि आपको वह व्यवहार पसंद न हो (और पसंद आएगा भी नहीं) तो फिर आप इस प्रकार की नौबत दूसरों पर क्यों लाना चाहते हैं। सिर्फ इतना-सा विचार आप अपने मन में लाएँ और जरा सोचिए कि यदि मेरे कारण दूसरे किसी व्यक्ति पर ऐसी नौबत आई हो, तो मुझ पर भी कभी न कभी ऐसी ही नौबत आ सकती है।

इस संदर्भ में आप विश्वास कीजिए कि आप जैसा बोएँगे वैसा पाएँगे, क्योंकि इस दुनिया में नियति का या कर्म का कानून बहुत ही कठोर होता है। इस संसार का सबसे महत्त्वपूर्ण और पहला नियम है कि मनुष्य कहीं भी, कभी भी, जो अच्छा या बुरा कर्म करता है, उसका परिणाम उसे कहीं न कहीं, कभी न कभी भी, किसी भी समय भुगतना ही पड़ता है। नियति का मनुष्य को दिया हुआ यह वचन है कि जो अच्छा काम करेगा उसका भविष्यकाल उज्ज्वल ही होगा। यदि बबूल के वृक्ष लगाए हों तो उनसे आम मिलना असंभव है। कहावत ही है कि ''रोपे पेड़ बबूल के आम कहाँ से होय''। तात्पर्य यह है कि जिस प्रकार हम बोते हैं उसी प्रकार पाते हैं। हमें सोचना चाहिए कि दूसरों के अंतःकरण में हम किस प्रकार का बीज बोते हैं। जरा सोचिए तो कि हम बैंक में जितना पैसा जमा करते हैं उतना ही निकाल सकते हैं न, या उससे भी अधिक निकाल सकते है? आपने यदि प्रेम किया हो तो बदले में आपको प्रेम ही मिलेगा और यदि क्रोध किया हो तो बदले में क्रोध ही मिलेगा। यदि दूसरों के बारे में ईर्ष्या का भाव हो तो आपसे भी वह व्यक्ति ईर्ष्या ही करेगा। यदि आपने दूसरों को पीड़ा पहुँचाई हो तो आपको भी पीड़ा का ही सामना करना पड़ेगा। प्रत्येक के हृदय में एक भावना का खाता रहता है। आपको यह देखना ही होगा कि इस खाते में आपने क्या-क्या जमा (Deposit) करके रखा है। जो जमा है वही और उतना ही तो निकल सकेगा।

◈ ◈ ◈

जरा सोचिए तो कि हम बैंक में जितना पैसा जमा करते हैं उतना ही निकाल सकते हैं न, या उससे भी अधिक निकाल सकते है?

प्रत्येक के हृदय में एक भावना का खाता रहता है। आपको यह देखना ही होगा कि इस खाते में आपने क्या-क्या जमा (Deposit) करके रखा है। जो जमा है वही और उतना ही तो निकल सकेगा।

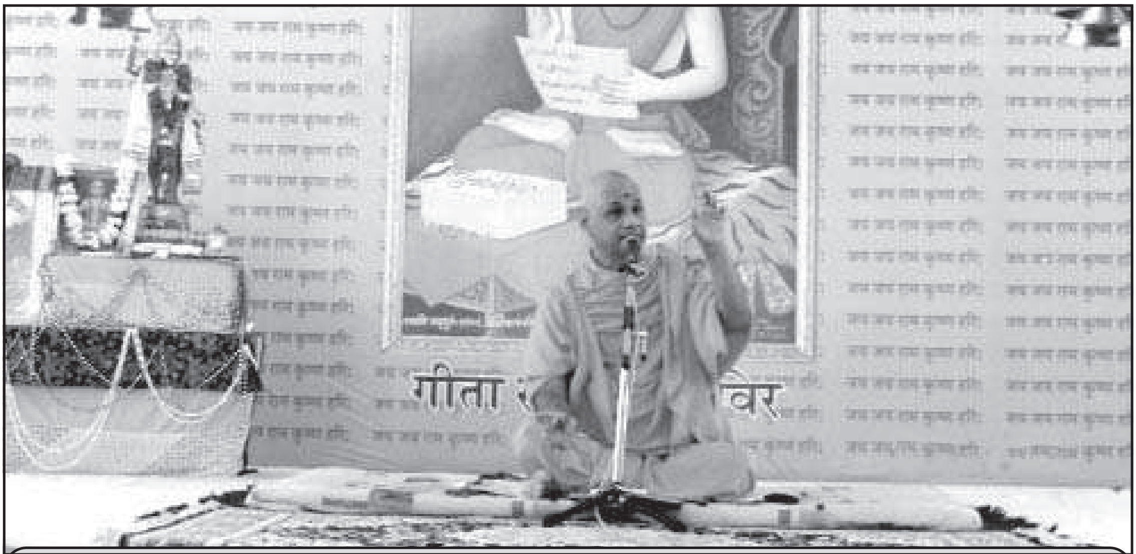

गीता साधना शिविर-२०१५ : एक दृष्टिक्षेप में!

पुण्यतोया भगवती गंगामैया के पावन तट पर प.पू. स्वामी गोविंददेव गिरि जी महाराज के सान्निध्य में गीता साधना शिविर (सप्तदश) वानप्रस्थ आश्रम, स्वर्गाश्रम ऋषिकेश में दि. ६ जून २०१५ से आरम्भ होकर दि. १३ जून २०१५ को समाप्त हुआ। इस शिविर में १३९ महिलाएँ तथा १०० पुरुष कुल २३९ शिविरार्थी तथा २३ कार्यकर्त्ता और २१ सेवक उपस्थित थे।

राजस्थान से लेकर पूर्वांचल के असम–नागालैण्ड तक और उत्तर के हिमाचल प्रदेश से लेकर दक्षिण के तमिलनाडू तक १४ राज्यों से साधक यहाँ आए थे, जिसमें महाराष्ट्र, गुजरात, राजस्थान, हरियाणा, दिल्ली, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, प. बंगाल, असम, नागालैण्ड, आन्ध्र प्रदेश और तमिलनाडू आदि राज्य सम्मिलित थे।

शिविर में सुबह ४ बजे प्रातरुत्थान से रात १० बजे दीप विसर्जन तक विविध कार्यक्रमों में अत्यंत उत्साह के साथ साधक सहभागी हुए। डॉ. रामेश्वरजी माहेश्वरी के नेतृत्व में प्रभात फेरी में भजन गाते हुए साधक सत्संग भवन पहुँचते और श्री प्रणव जी पटवारी के साथ प्रातः स्मरण तथा दैनिक संकल्प का उच्चारण करते।

योगासन एवं प्राणायाम –

योगासन–प्राणायाम के सत्रों में वरिष्ठ साधको ने योगाचार्य श्री सुरेशजी जाधव से सूर्यत्राटक आदि का प्रशिक्षण पाया। श्रीमती प्रमिला ताई माहेश्वरी ने साधकों को प्राणायाम से अवगत कराया। प.पू.जनार्दन स्वामी योगाभ्यासी मंडल, नागपुर के प्रशिक्षक श्री सुधीरजी एवं श्रीमती सुषमाजी राजे ने साधकों को योगासन, सूर्य नमस्कार के साथ जलनेति की शुद्धि क्रिया का प्रशिक्षण दिया।

गीता की छाया में
प.पू. स्वामीजी का सान्निध्य :–

प.पू. स्वामीजी ने साधकों को ध्यान के माध्यम से भावविभोर अवस्था में प्रभु की निकटता का आनन्द प्रदान किया। गीता संथा के कालांश में हरेक साधक ने १ अध्याय का शुद्ध उच्चारण सीखा। इस वर्ष तीसरा, छठा, नौवां, ग्यारहवां, बारहवां, चौदहवां, पंद्रहवां तथा अठारहवां अध्याय सिखाये गये। समंत्र षोडषोपचार पूजा विधि प्रात्यक्षिक के साथ परिचित किया।

इस शिविर के आनन्द का परमोच्च शिखर याने प्रवचन सत्र

जिसमें प.पू. स्वामीजी की गंगा जल जैसी पवित्र वाणी से साधकों ने ज्ञानामृत पान किया। सुबह के सत्र में श्रीमद्भगवद्गीता के ७ वें अध्याय के ज्ञान-विज्ञान योग के जटिल एवं कठिन सिद्धान्त भी सरलता से स्वामीजी ने समझाए। सारे बछड़े बन गीता मैय्या का दुग्धामृत प्राशन करते रहे और शंका समाधानों की प्यास भी बुझाते रहे।

इस वर्ष से २१ जून विश्वयोग दिवस के रूप में सारे विश्व में मनाया गया। प.पू. स्वामीजी ने 'विश्व योग दिवस' वास्तव में विश्व गीता दिवस है, यह प्रतिपादित करते हुए ''पूर्णयोग बोधिनी गीता'' का उद्बोधन किया।

दोपहर के सत्रों की शुरुआत श्री प्रणवजी पटवारी के साथ गीता पारायण से होती, जिसमें सम्पूर्ण गीता पारायण का लाभ सभी ने लिया।

चर्चा चिन्तनिका के माध्यम से साधकों ने प्रवचनों में सुने विचारों का उत्साहपूर्वक मंथन किया।

डॉ. केशवचंद्र क्षीरसागर जी की अध्यक्षता में साधकों ने मौन जप द्वारा अंतर्यात्रा की

श्री कपिल जी के नेतृत्व में साधकों ने आश्रम की साफ-सफाई करके श्रमदान का महत्त्व समझा।

श्री सतीश जी व्यास के साथ सभी श्री रामचरित्र रत्नमाला के दोहे गाते रहे। प्रतिदिन दैनिकी लिखाना

साधकों के लिए शिविर का अविभाज्य अंग रहा।

राष्ट्र चिन्तनः–

गीता साधना शिविर एक आध्यात्मिक शिविर है, परंतु 'राष्ट्र सर्वोपरि है', यह भाव जागृत रखने हेतु प्रति-दिन राष्ट्र चिंतन का कार्यक्रम होता रहा।

राष्ट्र चिंतन माला में श्री विजय नारायण उपाध्याय के अतिरिक्त डॉ. संदीपराज महिंद ने ''बंदा बहादुर की जीवनी'', श्री दुर्गेश जी परुलकर ने ''भारतीय इतिहास का पुनर्जागरण'', श्री आशु जी गोयल ने ''गीता परिवार का कार्य'', श्री प्रणव जी पटवारी ने ''स्वभाषाभिमान'', श्री संदीपजी सोमानी ने ''भारतमाता पर हो रहे सांस्कृतिक आक्रमण'' और वेदमूर्ति श्री शांतनु जी ने ''मेरे सपनों का भारत'' आदि विषयों के पुष्प पिरोये।

शिविर व्यवस्था :–

श्रीमती निर्मलाजी मारू के मार्गदर्शन में बनी रसोई से साधक अन्नपूर्णालय में तृप्ति पाते रहे।

श्रद्धेय श्री नारायणदासजी मारू (काकाजी) के मार्गदर्शन में श्री दामोदरजी मारू तथा श्री आशुजी गोयल ने प्रभावी एवं सफल संचालन किया। प.पू. स्वामीजी से आशीर्वाद प्रसाद पाकर सभी धन्य हुए!

जय श्रीकृष्ण!

– श्रीनिवास वर्णेकर

गीता प्रवचन सार

अध्याय-७

(श्रीमद् भगवद् गीता के सातवें अध्याय के कतिपय महत्वपूर्ण बिन्दु)

हर वर्ष की भाँति इस वर्ष भी वानप्रस्थ आश्रम, ऋषिकेश में प.पू. स्वामी गोविंदेव गिरि जी महाराज के संरक्षण में गीता साधना शिविर का आयोजन हुआ। यह सतरहवां शिविर था।

इस बार प.पू. गुरुदेव द्वारा गीता के सातवें अध्याय की विस्तृत एवं जीवनोपयोगी व्याख्या की गई। इनके प्रमुख बिन्दु श्री पटवारी जी द्वारा नोट किये गये, जो पाठकों के लाभार्थ यहाँ प्रस्तुत हैं।

– संपादक

प्रा. जनार्दन राजाराम पटवारी

ज्ञान विज्ञानयोग

* इस वर्ष, प्रतिवर्ष की तुलना में नए शिविरार्थी अधिक होने के कारण सर्वप्रथम इस गीता–साधना के विषय में कुछ बातों को समझना होगा। गीता न केवल भारत का अपितु समूचे विश्व का अनूठा ग्रंथ है। यह केवल पठनीय पुस्तक मात्र नहीं, आचरण का पाथेय है।
* एक दृष्टि से देखा जाए तो गीता वेदों के विचारों का संकलन है और दूसरी दृष्टि से यह वेदों का बीज है।
* विद्याएं दो प्रकार की होती हैं – उपजीविका विद्या और जीवनविद्या। उपजीविका विद्या चरितार्थ चलाने में काम आती है, तो जीवनविद्या जीवन को अधिकाधिक निखारने में। गीता जीवन विद्या है। इसीलिए सार्वजनिक है।
* कुरुक्षेत्र के समरांगण के मध्य में खड़ा अर्जुन युद्ध न करने की बात कर रहा है। पहले अध्याय में तो उसने भगवान के सम्मुख एक लंबा भाषण ही कर दिया। भगवान अभी भी चुप है, क्योंकि अन्नदान तो बिना माँगे करना चाहिए; किन्तु **ज्ञान तो जिज्ञासा करने पर ही देना चाहिए।** अर्जुन ने जब जिज्ञासा प्रगट कर भगवान की शरण ली, उसी क्षण प्रभु ने अपना अद्‌भुत उपदेश आरंभ किया।
* गीता योगमय ग्रंथ है। इस के हर अध्याय का नाम किसी न किसी योग से है। देखा जाए तो योग की चार विधाएँ हैं। ज्ञानयोग, कर्मयोग, भक्तियोग, ध्यानयोग।
  ध्यानयोग की चार उपविधाएँ है –
  १) हठयोग २) राजयोग ३) मंत्रयोग ४) लययोग।
* योगविषयक विवेचन करते हुए छठवें अध्याय के अंत में भगवान अर्जुन से कहते हैं, ''अर्जुन तुम योगी बन जाओ, क्योंकि योगी सर्वश्रेष्ठ है।'' और इतना कहकर वे रुके नहीं, इसके आगे कहा –''योगियों में भी जो श्रद्धापूर्वक मुझे भजता है, वह मुझे अत्यधिक प्रिय है।'' यहीं पर हमें साँतवे अध्याय का बीज प्राप्त होता है।
* साँतवें अध्याय का पहला श्लोक गीता का एक विशेष श्लोक है। साधना और उसकी फलश्रुति इन दोनों के विषय में यहाँ बात की गई है।
* भक्त कैसा? तो 'मुझ में आसक्त रहकर' एवं 'मेरे आश्रित रहकर' साधना करनेवाला।
* उसे क्या प्राप्त होगा? तो 'मेरा संशयरहित एवं समग्र' ज्ञान।
* ज्ञानी भक्तों में अग्रगण्य है ठाकुर रामकृष्ण परमहंस। वे काली में

आसक्त भी थे और काली के आश्रित भी और उन्हें परमतत्त्व का संशय रहित एवं समग्र ज्ञान अपने आप प्राप्त हुआ।

* भगवान से हमारे मन का जुड़ा रहना अत्यावश्यक है, क्योंकि हमें प्रतीत होनेवाला विश्व यह केवल हमारे मन की उपज है। शेक्सपियर ने कहा–
"Nothing is good or bad in the world but our mind makes it so."
* भगवान में आसक्ति बढ़ जाती है तब प्रपंच की अनासक्ति लानी नहीं पड़ती, आ जाती है। तुकाराम महाराज ने कहा–
''प्रपंच वोसरो। चित्त तुझे पायी मुरो।।''
* प्रकृति दो प्रकार की होती है। परा और अपरा। अपरा (जड़) प्रकृति – भूमि, जल, अग्नि, वायु, आकाश, मन, बुद्धि एवं अहंकार ।
परा (चेतन) प्रकृति – जीव।
सारा अनुभवगम्य संसार इस प्रकृति (परा–अपरा) में समाविष्ट है।
* जीव परमात्मा का अंश नहीं, अंशसमान है। जीव परमात्मा विमुख एवं प्रकृति सम्मुख है तथा **परमात्मा प्रकृति से परे है।**
* अपनी विभूतियाँ बताते हुए भगवान ने एक महत्त्वपूर्ण बात कह दी 'जो धर्मसंगत है, वह कामना भी मैं ही हूँ।'
* इसलिए ध्यान रहे, कामना हो, किन्तु वह धर्म के अनुसार हो।
* पूरा संसार तीन गुणों में विभाजित है। सत्त्व, रज और तम। सत्त्वगुण ज्ञानस्वरूप है। रजोगुण क्रियास्वरूप है तथा तमोगुण जड़त्वस्वरूप है। संसार तीन गुणों में फंसा हुआ है और परमात्मा इन तीन गुणों को व्यापने वाले हैं।
* संसार विनाशी है और परमात्मा अविनाशी। संसार कैसा है? योगवासिष्ठकार कहते हैं–
सर्वे क्षयान्ता निचया : पतनान्ताः समुच्छ्रयाः।
संयोगा विप्रयोगान्ता मरणान्तं च जीवितम्।।

नचिकेता बुद्धिमान था जो सांसारिक भोगों से मोहित नहीं हुआ; उसने एक ही वाक्य कह दिया– '**अपि सर्वं जीवितमल्पमेव**'

* गुलाबराव महाराज ने कहा – 'भक्ति का सही आनंद तो ज्ञान के बाद ही आता है' उन्होंने ज्ञानियों के दो प्रकार भी बताए – कृतोपास्ति (जो उपासना करते हुए ज्ञानतक पहुँचते है।) और अकृतोपास्ति (जो बिना उपासना किये ज्ञानी बन जाते है।)
* ज्ञानेश्वर महाराज ने ज्ञानी भक्तों के विषय में बडी सुंदर बात कही –
''मग याहीवरी पार्थां ।
माझिया भजनी आस्था।
तयांते भी माथा। मुकुट करी।।''
(ज्ञानोपरांत भी जो मेरे भजन में रत हैं वे तो मेरे मस्तक पर मुकुट की तरह विराजित रहते हैं।)
श्रीमद्भागवत का यह श्लोक अत्यंत मननीय है–
आत्मारामाश्च मुनयो निर्ग्रन्था अप्युरुक्रमे।
कुर्वन्त्यहैतुकीं भक्तिम् इत्थम्भूतगुणो हरिः।।
(यह गौरांग महाप्रभु का अत्यंत प्रिय श्लोक रहा।)
* वासुदेवः सर्वमिति – यह तो गीता का शिखरोपदेश है। सारा विश्व ज्ञानी को भगवन्मय ही लगता है। हमारे धर्म की यह सबसे बड़ी विशेषता है और इसीलिए यह संसार का सबसे महान धर्म है।
* सातवें अध्याय के अंत में बड़ी सुंदर बात आती है– **येषां त्वन्तगतं पापं....** पाप नष्ट हो जाने पर भक्तिमार्ग अधिक सरल हो जाता है। पुण्य करने से भगवान नहीं मिलेंगे, किंतु भगवान तक पहुँचने का मार्ग अवश्य मिलेगा। इसलिए कुछ–न–कुछ साधन चलता रहना चाहिए।
जितना समय Whats app पर बर्बाद होता है; उसका आधा समय भी भगवान के नामस्मरण में व्यतीत होगा, तो उद्धार पक्का।
* जन्म, मृत्यु, जरा और व्याधि – इन दोषों का दर्शन ज्ञान का लक्षण है। भगवान बुद्ध की अंतर्यात्रा का आरंभ इन दोषों के दर्शन से ही हुआ।

शिविर के विषय में मनोगत

गंगातीरे गीतास्नानम्!

नमो गोविन्ददेवाय ज्ञानदेवस्वरूपिणे।
वाग्मिने वाङ्निधानाय यतये वेदमूर्तये॥

गीता साधना शिविर की बात होती है तो मुझे ज्ञानेश्वर महाराज की एक ओवी का स्मरण होता है–

देव धवकारी चिंतामणिचा। जरि पहुडला होय दैवाचा।
तरी वोसणताही बोलु तयाचा। सोपु न वचे॥
(अ.८ ओवी. ६)

कल्पना कीजिए कि चिंतामणि रत्न से बना कोई घर हो और वहाँ कोई भाग्यवान सो जाए, तो वह नींद में भी जो बड़बड़ाएगा वह भी सत्य ही होगा। उसी प्रकार यह शिविर मानो चिंतामणि रत्न का घर ही है, यहाँ की गई हर चेष्टा परमात्मप्राप्ति की ओर अवश्य बढ़ाती है। हर साधना सफल ही होती है। प्रातःकाल किये गए संकल्प का मनन करते हुए, दिन भर के व्यवहार का विवेकपूर्ण व्यवस्थापन अन्यत्र कहाँ देखने को मिल सकता है? स्वामीजी के मुख से प्रातः ज्ञानविज्ञान योग और सायं पूर्णयोगबोधिनी गीता का निरूपण तो साधकों के लिए श्रवणोत्सव ही था। **'यंल्लब्ध्वा चापरं लाभं मन्यते नाधिकं ततः'** इस गीतोक्ति से ही उसका वर्णन किया जा सकता है। वास्तव में स्वामीजी का उद्‌बोधन सुनने के बाद अन्य कुछ सुनने की इच्छा ही नहीं रहती।

शिविर की सब से उल्लेखानीय बात तो है राष्ट्रचिंतन! वैसे तो लग सकता है कि आध्यात्मिक साधना में राष्ट्रचिंतन का क्या काम? किंतु यही तो गलती है जो हम लोग करते आ रहे हैं। शिविर में आकर समझ में आता है कि न तो अध्यात्म के बिना राष्ट्र का उत्थान संभव है और न राष्ट्रचिन्तन के बिना अध्यात्म की परिपूर्णता।

अधिक क्या कहूँ? बस दो पंक्तियाँ–

गंगातीरे गीतास्नानं
गीताङ्के वा गंगास्नानम् ।
राष्ट्रचिन्तनं गुरुतरुमूले
किमितः परमिहपरकल्याणम्?॥

(अर्थात् – गंगाजी के तटपर गीतास्नान तथा गीता की गोद में गंगास्नान एवं सद्‌गुरुरूपी वृक्ष की छाया में राष्ट्रचिंतन! इससे अधिक और क्या हो सकता है? जो इहलोक और परलोक दोनों में ही कल्याणकारक हो)

– प्रणव पटवारी

.... पृष्ठ १० का शेष **("देहात्म–बुद्धि")**

है। कोई कारागृह का बंदी पराक्रम की कथाएँ सुनाने लगे। स्वतंत्र, मुक्त जीवन कितना आनंदमय होता है, यह बताने लगे, तो उसमें क्या तुक है? वैसे ही होता है विषयों, गृहस्थी के बंधन में जकड़े लोगों का मोक्ष–प्रतिपादन! ऐसी पुरुषार्थ की बातें उसके मुँह से निकलने पर हास्यास्पद ही बन जाती हैं। वैराग्य के बिना ज्ञान भी व्यर्थ ही है। ऐसे व्यक्ति की ज्ञानपूर्ण बक–बक याने कुत्ते का भोंकना! (श्रीरामदास स्वामी)

विवेक और वैराग्य दोनों मिलकर 'योग' बनता है। विवेक के द्वारा मन से अलिप्त बनना है। वैराग्य से प्रपंच दूर रखा जाता है। इस प्रकार अन्तर्बाह्य मुक्त होना याने योगी बनना! **जो मुख से ज्ञान की बातें करता है, उसका आचरण भी तदनुसार ही होना चाहिए।** इसी कारण हम कहते हैं कि 'विवेक' और 'वैराग्य' माने ज्ञान और अलिप्तता! ये दोनों जहाँ मिलते हैं, वह व्यक्ति श्रेष्ठ है, भाग्यशाली है। विवेक अंतःकरण की ज्ञानस्थिति है तो वैराग्य उसी आंतरिक स्थिति का बाह्य स्वाभाविक परिणाम है। (क्रमशः)

संत श्री गुलाबराव महाराज शताब्दि भक्ति महोत्सव
अद्भुत रास रच्यौ वृन्दावन।

– पं. अशोक पारीक

आधुनिक युग के लोकोत्तर संत ज्ञानेश कन्या, समन्वय महर्षि, प्रज्ञाचक्षु मधुराद्वैताचार्य संतश्री गुलाबराव महाराज पंचलतिका गोपी के रूप में निरन्तर गोपीभाव का आलंबन लेकर भगवान श्रीकृष्ण की भक्ति करते रहे। माधुर्य रस में डुबी पंचलतिका गोपी का अपने प्रियतम श्री श्यामसुंदर के साथ दिव्य संयोग का अप्रतीम क्षण भगवान श्रीकृष्ण की पावन लीला स्थली श्रीधाम वृन्दावन में पुन: एकबार प.पू. गुरुदेव के मंगल आशीर्वाद से देखने को मिला। जिस जिसने भी इस क्षण को आंखो से देखा एवं कानों से सुना उन्होंने यह मान्य किया कि श्रीधाम वृन्दावन में आज भी घनश्याम अपने भक्ति रस से आप्लावित भक्तों के भावों को पूर्ण करने के लिए 'रासक्रीडा' करते हैं। **धन्यं वृन्दावनं तेन भक्तिर्नृत्यति यत्र च।** देवर्षि नारदजी के इस वचन का आज यथार्थ रूप में दर्शन करने को मिला। प.पू. गुरुदेव ने जिस मंगल स्वप्न के साथ संत श्री गुलाबराव महाराज शताब्दि भक्ति महोत्सव का दिव्य आयोजन श्रीधाम वृन्दावन में किया, उन सभी स्वप्नों की पूर्ती दि. २३ से २७ सितंबर २०१५ के पवित्र समयावधि में मानो मूर्त रूप में प्रकट हो गई। भक्ति महोत्सव में पधारे अनेक संतो ने पू. गुरुदेव द्वारा आयोजित इस उत्सव की भूरी-भूरी प्रशंसा करते हुए कहा कि स्वामीजी का यह स्वभाव रहा है कि वे स्वयं के नाम को दूर रखकर किसी न किसी संत का नाम एवं उनके अलौकिक जीवन को भगवद् भक्तों के सामने रखते हैं। जिससे कि समस्त मानव मात्र अपने जीवन को श्रेष्ठतम बना सके। पू. गुरुदेव का मुख्य स्वप्न था संत श्री गुलाबराव महाराज महाराष्ट्र की पावन धरा से आगे बढकर संपूर्ण विश्वपटलपर छा जाये। इस स्वप्न की पूर्ती अमरावती से पधारे डॉ. श्री. अरविंदजी देशमुख ने प्रथम दिन के अपने दिव्य वक्तव्य के माध्यम से की। आपके द्वारा पू. महाराजश्री के चरणों में समर्पित वाक्सेवा से मंचस्थ संतवृन्द भी बहुत प्रभावित हुए तथा पू. महाराजश्री के दिव्य साहित्य का अध्ययन करने के लिए आतुर हुए इससे यह स्पष्ट हो गया कि जब सभी भारतीय संत श्री गुलाबराव महाराज द्वारा रचित साहित्य का दर्शन करेंगे। जल्द ही महाराज जैसी महान विभूती अखिल विश्व को मिल जायेगी। इस व्याख्यानमाला के अंतर्गत डॉ. नयनाताई कडु ने भी श्री महाराजजी के चरणों में अपनी अद्भुत शैली में वाक्पुष्प अर्पित किये।

२३ सितंबर को श्रीधाम वृन्दावन के हृदय में बसे फोगला आश्रम के पवित्र प्रांगण में वैष्णव कुल भूषण श्रीमद्जगद्गुरु द्वाराचार्य प.पू. संत श्री राजेन्द्रदासजी महाराज, प.पू. स्वामी श्री गोविंददेवगिरि जी महाराज, डॉ. श्री. भैय्या साहेब घटाटेजी, प.पू. प्रज्ञाचक्षू मुकुंद काका, सरसंघचालक डॉ. श्री. मोहनजी भागवत एवं भारतवर्ष के उच्चतम संतो के पावन सान्निध्य में हुआ। कार्यक्रम के आरंभ में डॉ. विजया गोडबोले एवं भक्तिधाम, चांदुर बाजार से आये श्री. गिरीशजी शहाणे के मधुर कंठ से गुलाबराव महाराज द्वारा रचित पदों का गान किया गया। दि. २४ को प.पू. स्वामी पद्मभूषण गुरुस्वामी सत्यमित्रानंद गिरि जी महाराज के साथ-साथ श्रीधाम वृन्दावन के रसिक संत प.पू. श्री किशोरबिहारीदासदेवजी महाराज, महंत श्री रामप्रवेशदासजी महाराज, महंत श्री फूलडोलजी महाराज आदि संत मंचासीन होकर सभी भक्तों के जीवन को धन्य कर रहे थे। प्रतिदिन श्रीधाम वृन्दावन के दिव्य संतो का पूजन एवं प्रवचन होता था।

आज दि. २५ सितंबर वामन द्वादशी का

मंगल दिवस सभी भक्तों के जीवन को पावन करनेवाला दिन था। आज सुबह से ही संत श्री गुलाबराव महाराज (पंचलतिका गोपी) के पावन सान्निध्य में दिव्य संकीर्तन यात्रा के साथ श्रीधाम वृन्दावन की परिक्रमा की गई। परिक्रमा करते समय प्रत्येक साधक को यह आभास हो रहा था कि आज ठाकुरजी एवं पंचलतिका गोपी स्वयं हमारे साथ दिव्य नृत्य करते हुए श्री व्रजधाम की परिक्रमा कर रहे हैं। भक्तिधाम, चांदुर बाजार के लगभग २०० साधकों के द्वारा महाराष्ट्र से लायी संत श्री गुलाबराव महाराज की पावन पालखी के साथ श्रीधाम वृन्दावन की परिक्रमा न भूतो न भविष्यति ऐसी रही। आज वह पावन दिन भी भक्तों के आँखो के सामने उपस्थित हुआ। जब पंचलतिका गोपी दुल्हन बनी एवं श्री ठाकुरजी दुल्हे। इस मंगल परिणय का इंतजार गत दो महिनें से भक्तवृन्द कर रहे थे। श्री ठाकुरजी की दिव्य बरात में सहभागी होने का सभी भक्तों को सौभाग्य प्राप्त हुआ। पानीपत के श्री. चमनलालजी गुप्ता एवं पानीपत के गुरुभक्त परिवार के सभी शिष्यों को देवी पंचलतिका का कन्यादान करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। आज की इस मंगल परिणय बेला में पानीपत के विधायक श्रीमती रोहिता व सुरेन्द्र टेवडीजी एवं समालखा से श्री. रविन्द्र मछरोलीजी ने अपनी विशेष उपस्थिती निभाई। आज ही भक्ति महोत्सव के मंच को धन्य करने गीतामनीषी महामण्डलेश्वर प.पू. स्वामी ज्ञानानंदजी महाराज एवं बीकानेर से प.पू. स्वामी संवित् सोमगिरि जी महाराज भी पधारे। आज की रात्री में श्री ठाकुरजी ने अपनी अत्यंत प्रिया देवी पंचलतिका को गोपी के रूप में स्विकार कर दिव्य महारास में सहभागी किया। दुसरे दिन प्रात: काल की मंगल बेला में जब श्री ठाकुरजी एवं अपनी प्रिया देवी पंचलतिका के विश्राम भवन में भक्तों ने प्रवेश किया तो वहाँ की दिव्य स्थिति को देखकर स्तब्ध रह गये। उस दृश्य का जिन-जिन ने दर्शन किया वे सब धन्यता का अनुभव करेंगे एवं वह क्षण उनके संपूर्ण जीवन के क्षणों में स्मरणीय क्षण होगा। लेखनी के द्वारा उस पावन चरित्र का वर्णन कर पाना असंभव है।

पंच दिवसीय पावन उत्सव में १०८ व्रज कुमारीकाओं का मंगल पूजन एवं १०८ ब्राह्मणों को भोजन भी करवाया गया। इस उत्सव में सहभागी होने के लिए व्रज के दिव्य संतों में प.पू. श्री. कृष्णचन्द्रजी ठाकुर, डॉ. श्री. श्यामसुंदरजी पाराशर, श्री गिरिराज शास्त्रीजी, श्री. अनिल शास्त्रीजी, श्री. किशोरीरमणाचार्यजी आदि संतो ने अपनी पावन उपस्थिति दर्ज की।

दिव्य भक्ति महोत्सव का समापन समारोह में व्रज के नंद बाबा कार्ष्णि गुरु स्वामी शरणानंदजी महाराज, आचार्य महामण्डलेश्वर प.पू. श्री अवधेशानंदगिरि जी महाराज, प.पू. गुरुदेव, स्वामी संवित् सोम गिरि जी महाराज, श्रीनाथ पीठाधीश्वर प.पू. श्री जितेन्द्रनाथ जी महाराज ने अपने अमोघ वचनामृतों से सभी को धन्य किया तथा मनुष्य जीवन को संस्कारमय बनाने का संदेश दिया। पंच दिवसीय महोत्सव के अध्यक्ष मलूक पीठाधीश्वर द्वाराचार्य महाराजजी इस मंगलमय आयोजन से अत्यंत प्रसन्न थे एवं आपने गद्‌गद् कंठ से इस आयोजन की स्तुति की। भक्तिमहोत्सव की संपन्नता में फोगला आश्रम के श्री. बिहारीलालजी एवं भागवताचार्य श्री श्याम महाराज, श्री श्रीकांत महाराज एवं भक्तिधाम चांदूर बाजार के सभी पदाधिकारी कार्यकर्ता एवं भाविक भाई-बहनों के अत्यंत सोत्साह सहभागसे ही यह कार्यक्रम संपन्न हो सका। अत: ये सभी धन्यवाद के पात्र हैं।

यहाँ उल्लेखनीय है कि भक्ति महोत्सव के अंतर्गत हैदराबाद, सिकंदराबाद के सोंथलिया परिवार द्वारा श्रीमद्भागवत कथा का भी मंगल आयोजन किया गया। जो कि अत्यंत भव्यता के साथ संपन्न हुआ।

◈ ◈ ◈

वृंदावन में संत ज्ञानेश्वर वेदविद्यालय के नूतन भवन का उद्घाटन

– डॉ. आशू गोयल

'वेदोऽखिलोधर्ममूलं' वेद ही हमारी सनातन संस्कृति के मूल हैं। आज संसार को जो भी वाङ्मय प्राप्त है वह सब वेदरूपी कल्पवृक्ष का ही फल है। इसलिए वेदरूपी कल्पवृक्ष की रक्षा करना हम सभी का अनिवार्य कर्तव्य है। वेदनारायण के मूल मंत्रों की सुरक्षा से ही वेद संपदा सुरक्षित रह सकेगी यह विचार अपने महामन में लेकर परम पूज्य स्वामी गोविंददेवगिरि जी महाराज ने आज से लगभग २५ वर्ष पूर्व संत श्री ज्ञानेश्वर महाराज की समाधि स्थल आलंदी (पुणे) में महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान की स्थापना की।

स्वामीजी की वेदनिष्ठा से प्रभावित हो उनके आह्वान पर हजारों सहयोगी इस भगवद्कार्य को अपना जीवन लक्ष्य मानकर जुडते चले गए। उत्तर में जम्मू कश्मीर से लेकर पूर्व में इंफाल तक भारतभूमि पर २५ वेदविद्यालयों का बृहद संचालन स्वामीजी के अत्यंत कुशल व सूक्ष्म नेतृत्व में वेदव्यास प्रतिष्ठान बडे ही सुचारु ढंग से कर रहा है। चारों वेदों का सम्यक अध्ययन इन २५ विद्यालयों में वैदिक बटुकों हेतु सुलभ हो गया है। आज जिनको संपूर्ण यजुर्वेद कंठस्थ है, ऐसे हजारों वैदिक छात्र प्रतिष्ठान ने भारतमाता के चरणों में समर्पित किये है। इन्ही २५ विद्यालयों के अंतर्गत गत ८ वर्षों से भगवान श्री बांकेबिहारी जी के पावन सान्निध्य वृंदावन धाम में 'संत ज्ञानेश्वर वेदविद्यालय' का संचालन हो रहा था लेकिन स्थानाभाव के कारण अधिक सुविधाएँ उपलब्ध नहीं थी। पूज्य स्वामीजी की सदैव यह दृष्टि रहती है कि वेदविद्यालय का भवन भी आधुनिक विद्यालयों के तरह सभी आवश्यक सुविधाओंसे पूर्ण हो। उनकी इस भावना को समझकर संत श्री ज्ञानेश्वर गुरुकुल ने एक भव्य भवन का निर्माण किया और २३ सितंबर २०१५ को 'संत ज्ञानेश्वर वेदविद्यालय' के नूतन भवन के उद्घाटन की तिथि निश्चित की गयी।

दि. २१ सितंबर २०१५ राधाष्टमी के मगलपर्व से यह उत्सव आरंभ हुआ। विद्यालय प्रांगण में भजन संध्या का आयोजन किया गया जिसमें सभी कार्यकर्ताओं व भक्तों ने बड़े उत्साह के साथ भाग लिया। २२ सितंबर को प्रात: से ही पंडित श्री रेणुकादास जी शास्त्री एवं आचार्य श्री संतोषजी महापात्रा के सान्निध्य में सभी वैदिक विप्रों ने देवपूजन एवं विद्यालय भवन के मंदिर में स्थापित अत्यंत दिव्य व सुंदर प्रतिमाओं की प्राणप्रतिष्ठा वैदिक विधिविधान व यज्ञ अनुष्ठानों के साथ आरंभ की। गीता परिवार लखनऊ, दिल्ली, पानीपत व अन्य स्थानों से कार्यकर्ताओं को इस भव्य उद्घाटन समारोह की व्यवस्था सँभालने हेतु आमंत्रित किया गया। २३ सितंबर प्रात:काल 'संत ज्ञानेश्वर वेदविद्यालय' का निर्माण जिन महानुभावों के सहयोग से संपन्न हुआ ऐसे प्रमुख सहयोगियों ने यज्ञ की पूर्णाहुति के पश्चात् प.पू. स्वामी जी से आशीर्वाद ग्रहण किया।

प्रात: ११ बजे से उद्घाटन हेतु आमंत्रित मान्यवरों में प.पू. महामंडलेश्वर गुरुस्वामी श्री सत्यमित्रानंद गिरि जी महाराज, महामहिम राज्यपाल (हरियाणा व पंजाब), श्री कप्तान सिंह जी सोलंकी, प.पू. सरसंघचालक श्री मोहनजी भागवत, मलूक पीठाधीश्वर प.पू. श्री राजेंद्रदासजी महाराज, सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक डॉ. श्री. विजयजी भटकर, प.पू. महंत श्री नृत्यगोपालदास जी महाराज, प.पू. प्रज्ञाचक्षु श्री मुकुंद काका, प.पू. महामंडलेश्वर श्री अखिलेश्वरानन्द जी महाराज, प.पू. श्री देवकीनंदन ठाकुरजी, एवं अमेरिका से पधारे महर्षि वैदिक युनिवर्सिटी, अमेरिका के डायरेक्टर प्रोफेसर श्री अलवारिज का शुभागमन द्वार पर वैदिक बटुकोंद्वारा वैदिक मंत्रो के उच्चारण व पारम्परिक स्वागत विधि के साथ हुआ। भारतमाता को गौरव प्रदान करनेवाले मान्यवरों का दर्शन कर सभी उपस्थित भक्तजन अत्यंत प्रफुल्लित हुए।

विद्यालय भवन की पट्टिका का अनावरण प.पू. सरसंघचालक श्री मोहनजी भागवत के करकमलों से सभी महानुभावों की उपस्थिति में हुआ। तत्पश्चात् सभी महानुभावों ने प.पू. स्वामीजी के साथ विद्यालय के नूतन मंदिर में प्रवेश किया एवं अत्यंत दिव्य एवं मोहक प्रतिमाओं का दर्शन कर सभी अभिभूत हुए।

मंच पर सभी अतिथियों के एक साथ पधारने

के पश्चात् समारोह का आरंभ वैदिक बटुकोंद्वारा सामवेद के दिव्य मंत्रो के गायन के साथ हुआ। इस वैदिक स्तवन के पश्चात प.पू. स्वामीजी श्री गोविंददेव गिरि जी महाराज ने अपने प्रास्ताविक उद्बोधन में महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान का ध्येय व परिकल्पना मंचस्थ संत महानुभावों व भक्तजनों के समक्ष रखी।

प.पू. स्वामीजी के प्रास्ताविक उद्बोधन के पश्चात् सभी आमंत्रित अतिथियों से मंच संचालक डॉ. आशु गोयल द्वारा दीप प्रज्ज्वलन करने का निवेदन किया गया। दीप प्रज्ज्वलन के पश्चात् प्रतिष्ठान के न्यासीगण श्री नारायणदासजी मारु, श्री विनीतजी व वनिताजी सराफ, श्री. विजयजी चौधरी, श्री. बृजमोहनजी अग्रवाल, श्री. सुशीलजी जालान, श्री. विष्णुजी गोयनका, श्री. दिनेशजी अग्रवाल, श्री. चमनलालजी गुप्ता, श्री. सुशीलजी गर्ग आदि महानुभावोंद्वारा उपस्थित संत समुदाय व अतिथियों का पूजन, स्वागत व माल्यार्पण किया गया।

तत्पश्चात् महामहिम राज्यपाल श्री कप्तान सिंहजी सोलंकी एवं प.पू. श्री मोहनजी भागवत द्वारा विद्यालय के आचार्यगणों, दानदाताओं एवं सहयोगियों को सम्मानित किया गया। प.पू. महामंडलेश्वर गुरुस्वामी श्री सत्यमित्रानंद गिरि जी महाराज से आशीर्वचनों और दिव्य उद्बोधनों का आरंभ हुआ। प.पू. स्वामीजी द्वारा वेदरक्षा हेतु की जा रही वेदसेवा की भूरी-भूरी प्रशंसा की। मलूक पीठाधीश्वर प.पू. श्री राजेंद्रदासजी महाराज ने कहा कि मैं इस भवन के भूमिपूजन हेतु आया था और इतना शीघ्र इसे पूर्ण देखकर मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। प.पू. श्री नृत्यगोपालदासजी महाराज ने भी अपने विचार प्रकट किये।

इसके पश्चात् अमेरिका से पधारे महर्षि महेश योगी युनिवर्सिटी के डायरेक्टर श्री अलवारिज ने भी वेदों की महिमा गायी। एक विदेशी अंग्रेज महानुभाव को इस प्रकार वेदों का महिमा गान करते देख उपस्थित सभी लोग हतप्रभ हो गए।

इसके पश्चात् जब कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प.पू. सरसंघचालक श्री मोहनजी भागवत को आशीर्वचन हेतु आमंत्रित किया गया तो एक अद्भुद घटना हुई। महामहिम राज्यपाल श्री कप्तान सिंहजी सोलंकी जो कि इस उद्घाटन समारोह के अध्यक्ष अतिथि थे वह प्रोटोकॉल तोडकर उठ खडे हुए और मोहन जी से पहले स्वयं बोलने की प्रार्थना की।

महामहिम राज्यपालजी बोले कि 'प्रोटोकॉल तो यही है कि जिस कार्यक्रम में राज्यपाल उपस्थित हो वहाँ अंतिम भाषण राज्यपाल का ही हो परंतु यह प्रोटोकॉल तोडकर मैं अपनी आत्मा की आवाज का पालन कर रहा हूँ, आदरणीय मोहनजी यहाँ हैं, अंतिम भाषण उन्ही का होना चाहिए।''

''यूनान मिस्र रोमा सब मिट गए जहाँ से,
अब तक मगर है बाकी नामों निशां हमारा,
कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी,
सदियों रहा है दुश्मन दौरे जहाँ हमारा।''

महामहिम ने जब यह पंक्तियाँ बोली तो सभी ने करतल ध्वनि से उनका अभिनंदन किया। उन्होंने इस श्रेष्ठ कार्य में वृंदावन ज्ञानेश्वर वेदविद्यालय हेतु राज्यपाल कोष से १० लाख रुपये आर्थिक सहयोग देने की घोषणा की। उनकी इस घोषणा का उपस्थित जनसमुदाय ने हर्षपूर्वक स्वागत किया।

अंतिम भाषण के लिए जब प.पू. सरसंघचालक श्री मोहनजी भागवत बोलने के लिए खडे हुए तो पूरा पंडाल तालियों और भारतमाता की जय के नारों से गूँज उठा। आदरणीय मोहनजी ने कहा कि मुझे अनेक बार वेदों का गायन सुनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ लेकिन सामवेद का गायन मुझे आज जीवन में दूसरी बार ही सुनने को मिला। उन्होंने एक अंग्रेजी पत्रिका रीडर्स डाइजेस्ट के एक लेख का उल्लेख करते हुए कहा की अब अंग्रेजी वैज्ञानिक भी यह मानते हैं कि विज्ञान अणु, परमाणु की खोज करते हुए अब हिग्स बोगान तक तो पहुँच गया है लेकिन अब इससे आगे जाना है तो विज्ञान को भी वेदों की ही शरण में जाना होगा। वेद और विज्ञान के विषय पर उन्होंने अत्यंत विद्वत्तापूर्ण उद्बोधन देकर सभी उपस्थित श्रोताओं, अतिथिगणों व संतवृंदों को भी प्रसन्न किया।

अंत में पं. श्री अशोकजी पारीक ने आये हुए सभी संतजनों और अतिथि महानुभावों को कृतज्ञ भाव से धन्यवाद उनके श्रीचरणों में निवेदन किया।

◈ ◈ ◈

गुरुपूर्णिमा महोत्सव २०१५

''नारायण समारब्धां शंकराचार्यमध्यमाम् ।
अस्मदाचार्यपर्यन्तां वन्दे गुरुपरम्पराम् ।।''

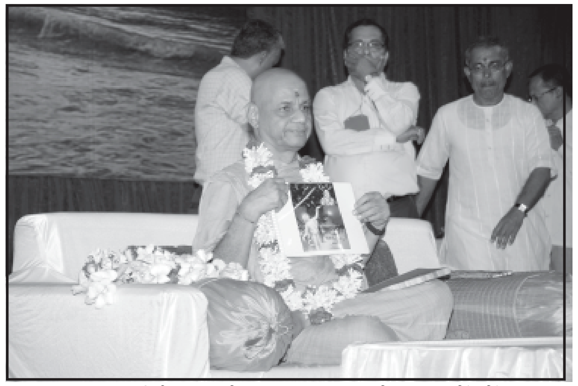

गुरुपूर्णिमा महोत्सव सद्गुरु के चरणों में ऋण समर्पित करने का पावन अवसर है। सद्गुरु के उपकारों से शिष्य कभी भी मुक्त नहीं हो सकता। अतः गुरुपूर्णिमा उत्सव के निमित्त सभी शिष्य सद्गुरु के चरणों में बैठकर उनके उपकारों का स्मरण करते हैं।

हमारी भारतीय संस्कृति के समस्त संप्रदायों ने महर्षि वेदव्यासजी को परमाचार्य माना है। इसलिए गुरुपूर्णिमा का एक दूसरा नाम व्यासपूर्णिमा भी रखा गया है। महर्षि वेदव्यास समस्त गुरुओं के आदिगुरु हैं। अत: गुरुपूर्णिमा के अवसर पर उनका स्मरण, पूजन अतीव आवश्यक है।

महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान प.पू. सद्गुरु स्वामी श्री गोविंददेव गिरिजी महाराज के पावन सान्निध्य में प्रतिष्ठान के वार्षिक उत्सव के रूप में प्रतिवर्ष गुरुपूर्णिमा महोत्सव गत २५ वर्षों से मनाता रहा है।

इस वर्ष साधक सम्मेलन और गुरुपूर्णिमा महोत्सव का द्विदिवसीय कार्यक्रम, महाराष्ट्र के भक्तों के विशेष आग्रह पर, ऋषिकेश के स्थान पर औरंगाबाद में समन्वय सेवा समिति एवं गीता परिवार, औरंगाबाद द्वारा बहुत ही सुन्दर एवं व्यस्थित रूप से आयोजित किया गया। जिसमें देश भर से आए हजारों भक्तों ने अत्यन्त हर्षोल्लास से भाग लिया।

दिनांक ३० जुलाई की संध्या को औरंगाबाद के भव्य अग्रसेन भवन में साधक सम्मेलन का आरम्भ महिला साधिकाओं की मनोरम भजनांजली से हुआ। तदनन्तर आयोजन समिति के सदस्यों ने श्री सत्यनारायणजी जाजू एवं श्री जगदीशजी सारडा आदि के साथ पू. गुरुदेव का पारंपरिक ढंग से भव्य स्वागत किया। इसी अवसर पर डॉ. दिलीपजी गोगटे की दो पुस्तकों ''संतगुरु चरित्र'' एवं ''चैतन्य महाप्रभु का चरित्र'' का विमोचन करते हुए पू. गुरुदेव ने डॉ. गोगटेजी के परिश्रम को विशेष रूप से रेखांकित कर उन्हें सम्मानित किया।

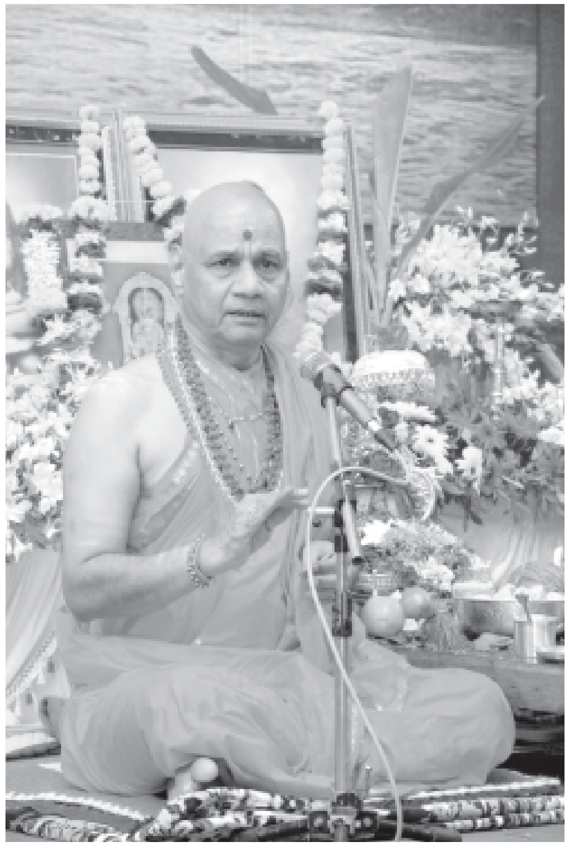

समन्वय परिवार की ओर से श्री चन्द्रकान्त केले ''केले काका'' को एक ''आदर्श भक्त'', आदर्श शिष्य एवं आदर्श सहयोगी के रूप में विशेषरूप से सम्मानित किया गया। इस अवसर पर पू.गुरुदेव ने भी ''केले काका'' द्वारा अनेक क्षेत्रों में सम्पन्न प्रयासों की भूरि–भूरि प्रशंसा की।

साधक सम्मेलन में गीता परिवार औरंगाबाद ने विशेष तैयारी के साथ देशभक्ति एवं गुरु भक्ति से ओतप्रोत रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया। दर्शकों की बार–बार बजती तालियों ने बालकों के परिश्रम की भारी सराहना की।

इस बार पू. गुरुदेव ने आशीर्वाद के स्थान पर साधकों की शंका–समाधान को अधिक उपयोगी बताते हुए कहा कि अध्यात्म क्षेत्र में कई बार प्रवचन से वह बात नहीं बनती, जो संवाद से बन जाती है। मन के संशय संवाद से ही दूर होते हैं। श्रीमद्भगवद्गीता श्रीकृष्ण एवं अर्जुन के मध्य सम्पन्न संवाद ही है। अतः इस बार साधकों ने अध्यात्म क्षेत्र की अपनी विभिन्न शंकाएँ प्रस्तुत की, जिनका पू. गुरुदेव ने सटीक, सरल एवं सहज समाधान कर साधकों को कृतार्थ किया।

गुरुपूर्णिमा का महोत्सव जैसा कि पूर्व में भी बताया गया है, कृतज्ञता प्रदर्शन का अवसर है, अतः अनुग्रह के उपरान्त प्राप्त नये संकेत, नई दिशा एवं परिवर्तित जीवन से उपकृत साधकगण, प.पू. गुरुदेव के पूजन हेतु एकत्र होते हैं, जो महर्षि वेदव्यास जी के पूजन एवं प्रतिष्ठान के वार्षिकोत्सव के रूप में अत्यन्त भव्य रूप से सम्पन्न होता है।

दि. ३१ जुलाई को सभागृह में बैठे सभी साधकगण प्रसन्न एवं उत्साहित दिखाई दे रहे थे। चारों ओर उल्लासमयी गहमा–गहमी दृष्टिगोचर हो रही थी। अचानक ''सद्गुरुदेव की जय'', ''भगवान वेदव्यास की जय'' के घोष के साथ चिरपरिचित प्रसन्न मुद्रा के साथ पूज्य गुरुदेव का आगमन हुआ। अग्रसेन भवन के सभागृह में उठा जयघोष मानो सम्पूर्ण सिडको क्षेत्र में फैल गया।

मंच पर प.पू. गुरुदेव ने सम्पूर्ण विधि–विधान से गणपति, महर्षि वेदव्यास, संत ज्ञानेश्वर, चारों वेद एवं पवित्र पादुकाओं का पूजन किया। साथ ही नीचे सभागृह में सभी अनुगृहीतों के प्रतिनिधि स्वरूप आयोजन समिति के सदस्यों, यजमानों महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान, संत ज्ञानेश्वर गुरुकुल के उपस्थित न्यासियों ने पू. गुरुदेव द्वारा प्रदत्त भगवान की पूजा की। इसी प्रकार कुछ साधकों ने हवन में भाग लिया।

उल्लेखनीय है कि महापूजा के दौरान पार्श्व से मन्द–मन्द स्वरों में गुरुपद महिमा के भजन–'सारे तीरथ आज आपके चरणों में, हे गुरुदेव प्रणाम आपके चरणों में', 'गुरुदेव दया करके मुझ को भी अपना बना लेना' आदि भजनों ने सभागृह के वातावरण को पवित्र बना दिया। महापूजा में उपस्थित साधकों ने आंखों से वह भव्य महापूजा देखी तथा कानों से उक्त गुरुपद भजनों से अपने कान मीठे किये।

पूजन के उपरान्त प.पू. गुरुदेव की अगुवायी में सभी अनुग्रहियों ने 'व्यां वेदव्यासाय नमः, सर्व देव देवी स्वरूपाय सद्गुरु श्री ज्ञानेश्वर महाराजाय नमः, एवं 'ज्ञानेश्वर माउली' मंत्रों का जपानुष्ठान अत्यन्त श्रद्धाभाव से सम्पन्न किया।

महापूजा, जपानुष्ठान के पश्चात, महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान के सह–सचिव की राजगोपाल जी मिणियार द्वारा 'प्रतिष्ठान' रौप्य महोत्सवी वर्ष का विशेष कार्य निवेदन साधकों के समक्ष, प्रतिष्ठान के स्वामी महर्षि वेदव्यासजी

को पढ़कर सुनाया गया। इसके अन्तर्गत वर्ष २०१४–२०१५के वार्षिक आय–व्यय विवरण के साथ ही वर्ष १९९० से आज तक की विशेष उपलब्धियों, गतिविधियों से भी सभी को अवगत कराया गया।

प.पू. गुरुदेव ने अपने उद्‌बोधन में गृहस्थाश्रम के महत्त्व से साधकों को अवगत कराते हुए बताया कि इसी आश्रम में रहकर व्यक्ति अपने चारों पुरुषार्थों धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की प्राप्ति करता है। आपने साधकों को सावधान किया कि मानव को अपनी कामनाओं की पूर्ति हेतु पर्याप्त अर्थोपार्जन करना चाहिये; किन्तु इसमें धर्म की मर्यादा का उलंघन न हो। आगे आपने बताया कि प्रत्येक मनुष्य को अपने जीवन में चार ऋणों को चुकाने के पश्चात् ही स्वयं की उन्नति अर्थात आत्मसाक्षात्कार की बात सोचनी चाहिये। पितृऋण, देवऋण, ऋषिऋण तथा समाजऋण चारों ऋणों को गृहस्थ में रहकर ही चुकाना संभव है।

आगे आपने 'प्रतिष्ठान' के रौप्य महोत्सवी वर्ष के प्रस्तुत कार्य निवेदन के विशेष बिन्दुओं पर प्रकाश डालते हुए कहा कि आगामी वर्ष से 'प्रतिष्ठान' के समान ही '**धर्मश्री समूह**' के अन्य संस्थानों यथा, संत श्री ज्ञानेश्वर गुरुकुल, गीतापरिवार एवं श्रीकृष्ण सेवा निधि का वार्षिक विवरण भी इस महोत्सव में प्रस्तुत किया जायेगा। इसका एक लाभ यह भी होगा कि जनता–जनार्दन को यह 'भली भांति ज्ञात हो सके कि प्रदत्त दानराशि का उपयोग कहाँ और किस प्रकार किया जा रहा है। '**धर्मश्री समूह**' के सभी संस्थानों की कार्य पद्धति में '**पारदर्शिता**' की प्राथमिक अनिवार्यता आरंभसे ही स्वीकार की गई है।

प.पू. गुरुदेव के उद्धबोधनोपरान्त साधकों ने बड़ी शांति एवं अनुशासन का परिचय देते हुए दर्शन एवं प्रसाद ग्रहण किया।

अंत में विशेषरूप से आयोजन समिति के सभी सदस्यों ने जिस उत्साह के साथ साधकों की भोजन एवं निवास की सुन्दर व्यवस्था की तथा द्विदिवसीय समस्त कार्यक्रमों को जिस व्यवस्थित रूप से सम्पन्न किया; उनमें सभी कार्यकर्ताओं का अहर्निश परिश्रम तथा पदाधिकारियों का बहुमूल्य मार्गदर्शन स्पष्ट रूप से झलकता था। आयोजन हेतु निर्मित पूजा समिति, आवास समिति, कार्यालय समिति, व्यवस्था समिति एवं भोजन समिति ने क्रमशः श्री विजय प्रकाश जी पलोड़, श्री सत्यनारायणजी जाजू, श्री रमेश जी दरक, श्री जगदीश जी सारडा एवं श्री चन्द्रप्रकाश साबू के नेतृत्व में प्रशंसनीय रूप से कार्य कर कार्यक्रम को सफल एवं यादगार बनाया।

– पं. अशोक पारीक

दीक्षा हेतु प्रतीक्षारत भक्त

पूजन

गीता परिवार समाचार

संगमनेर में सम्पन्न विभिन्न कार्यक्रम!

*** २५० विद्यालयों में संस्कार वर्ग * योग दिवस * गीत-संगीत-नृत्य के साथ विज्ञान!**

संगमनेर में ३३ केन्द्रों पर संस्कार वर्ग-

गर्मी की छुट्टियों में संगमनेर तहसील में ३३ केन्द्रों पर लगभग २२०० बच्चों ने संस्कार वर्ग का लाभ उठाया। इस वर्ष संस्कार-धन पुस्तक के आधार पर वर्गों का संचालन किया गया। 'देवी-देवताओं के स्वरूप का सन्देश' स्पर्धा में अनेक बच्चों ने भाग लिया और ५७ विद्यार्थियों को कोलकाता की मनीषिका संस्था से प्रकाशित पुस्तकें देकर पुरस्कृत किया।

अकोले में जिला परिषद् के २५० विद्यालयों में संस्कार वर्ग -

संगमनेर के निकट अकोले तालुका के २५० विद्यालयों में संस्कार वर्गों का आयोजन किया गया। दि. २१ अप्रेल से ५ मई के मध्य सम्पन्न संस्कार वर्ग का संचालन विद्यालय के शिक्षकों ने ही किया। इसके पूर्व इन विद्यालयों के शिक्षकों के लिए प्रशिक्षण वर्ग का आयोजन ध्रुव अकादमी में किया गया। जिसका संचालन कार्याध्यक्ष डॉ. संजय जी मालपाणी ने किया। जिला परिषद के विद्यालयों में शिक्षाधिकारी के आदेश से ही संस्कार वर्ग संपन्न हुए। लेकिन प्रशिक्षण वर्ग के पश्चात् शिक्षक जैसे गीता परिवार के कार्यकर्ता ही बन गए। सभी विद्यालयों को संस्कृत श्लोक एवं डॉ. संजयजी मालपाणी की आवाज में रिकॉर्डेड कथाकथन की सीडी दी गयी। इन संस्कार वर्गों से पूरे परिसर में एक नयी चेतना का संचार हो गया।

संगमनेर में योग सोपान उपक्रम और अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस का आयोजन -

२१ जून को प्रथम अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर गीता परिवार, संगमनेर ने भव्य कार्यक्रम का आयोजन किया। इस अवसर पर योग सोपान भाग १ में प्रशिक्षित १००० विद्यार्थियों ने विभिन्न योगासनों का संगीतमय प्रात्यक्षिक प्रस्तुत किया। इसके साथ ही संगमनेर के विद्यालयों में योग सोपान भाग २ का प्रशिक्षण भी इसी अवसर पर आरम्भ किया गया। कार्याध्यक्ष डॉ. संजय मालपाणी ने जब स्वयं इस प्रात्यक्षिक में भाग लिया तो विद्यार्थियों में उत्साह का संचार हो गया। कार्य विस्तारक श्री. दत्ता भांदुर्गे तथा योगशिक्षक निलेश पठाडे ने इस उपक्रम के लिए विशेष परिश्रम किया।

संस्कार बाल भवन, संगमनेर -

संगमनेर के संस्कार बाल भवन में ग्रीष्मावकाश में अनेक कार्यक्रम सम्पन्न हुए। इस वर्ष भी विविध रुचि वर्ग आयोजित किये गए। इसके अंतर्गत शतरंज, सुगम संगीत, रंगोली, मेहंदी, नृत्य, सुलेखन, कैलीग्राफी, हस्त-कला आदि वर्गों का संचालन कुशल प्रशिक्षकों की देखरेख में किया गया। इसके अतिरिक्त बाल भवन में छुट्टियों की दृष्टि से अनेक नए-नए उपक्रम भी आयोजित किये गए हैं।

बाल भवन में विज्ञान का जादू कार्यक्रम आयोजित -

सातारा के डॉ. कल्पना चावला, विज्ञान केन्द्र के डॉ. संजय पुजारी और उनकी टीम ने विज्ञान में रुचि निर्माण करने के उद्देश्य से गीत-संगीत-नृत्य के साथ विज्ञान के अनेक प्रयोग प्रस्तुत किये। इस कार्यक्रम में संस्कार वर्ग के सभी विद्यार्थी भी सम्मिलित हुए। मनोरंजन के साथ विज्ञान शिक्षण का यह ऐसा अनूठा उपक्रम था कि दो घंटे कब बीत गए, पता ही नहीं चला। हमारे पंचसूत्रों में एक विज्ञानदृष्टि का संस्कार इस माध्यम से विद्यार्थियों में हुआ।

बाल भवन के ओडिसी नृत्य के विद्यार्थियों की नई उपलब्धि :-

बाल भवन के नृत्य के विद्यार्थी पुणे में संपन्न शास्त्रीय नृत्य स्पर्धा में शामिल हुए और कड़ी स्पर्धा के बीच प्रथम स्थान प्राप्त किया। इसके पूर्व भरतनाट्यम और ओडिसी नृत्य के विद्यार्थी कोल्हापुर में हुए गिनीज़ बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में सहभागी हुए थे। बालभवन संचालिका अनुराधा मालपाणी ने इस उपलब्धी के लिए विशेष प्रयास किये।

निश्चलता तप का प्रथम सोपान है। - पूज्यपाद

गीता परिवार समाचार

विभिन्न स्थानों में सम्पन्न संस्कार शिविर

मुंबई एवं हैदराबाद में आवासीय संस्कार शिविर–

मुंबई के रामरत्ना विद्यालय और हैदराबाद के स्वामीनारायण गुरुकुल में गीता परिवार द्वारा संस्कार शिविर आयोजित किये गए। इन दोनों ही स्थानों पर अनेक वर्षों से लगातार संस्कार शिविरों का आयोजन होता रहा है। हैदराबाद में इस वर्ष मुंबई की विशेष टीम द्वारा पर्वतारोहण का प्रशिक्षण भी शिविरार्थियों को दिया गया।

नांदेड़ में गीता जयंती उत्सव –

गीता परिवार द्वारा गीता माहात्म्य व्याख्यान और गीता पठन स्पर्धा का आयोजन किया गया। स्पर्धा दो आयु वर्गों में ली गयी। पुरस्कार वितरण के साथ समारोह सम्पन्न हुआ।

विदर्भ प्रादेशिक माहेश्वरी महिला संगठन के सहयोग से गीता जयंती उत्सव –

सौ. ज्योति बाहेती एवं सौ. उषा करवा के प्रयास से महाराष्ट्र के विदर्भ क्षेत्र में सात शहरों में गीता जयंती का उत्सव मनाया गया।

अकोले –

विद्यामंदिर कन्या शाला में उत्साहपूर्ण वातावरण में गीता जंयती का उत्सव मनाया गया। गीता पूजन और बारहवें अध्याय के सामूहिक पठन के साथ कार्यक्रम का श्रीगणेश हुआ। गीताज्ञान स्पर्धा और रंग भरो स्पर्धा में अनेक बच्चों ने भाग लिया। पुरस्कार वितरण के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

कारंजा –

गीता परिवार और महिला मंडल के सदस्यों ने एकत्रित होकर गीता पूजन और गीता पाठान्तर के साथ गीता जयंती उत्सव मनाया।

जालना –

गीता परिवार, जालना द्वारा बच्चों को दो आयु गटों में विभाजित कर ग्रीष्मकालीन वर्ग का आयोजन किया गया। ७ वर्ष तक के बच्चों का एक गट और ७ से १४ वर्ष के बच्चों का दूसरा गट बनाया गया। संस्कार वर्ग में अनेक स्पर्धाएँ ली गयी। हनुमान चालीसा, देशभक्ति गीत, गीता का १२ वां अध्याय सिखाया गया। अंतिम दिन प्रभात फेरी निकाली गयी। श्रीमती अर्चना तोतला, संगीता राठी एवं अनेक कार्यकर्ताओंका इस यशस्वीता में विशेष सहयोग रहा।

विदर्भ विभाग –

महाराष्ट्र के विदर्भ में सौ. शोभाजी हरकुट के नेतृत्व में अनेक स्थानों पर गीता परिवार का कार्य चल रहा है – चांदुरबाजार – यहाँ एक साप्ताहिक संस्कार वर्ग नियमित रूप से चल रहा है। इसके अतिरिक्त एक मासिक संस्कार केन्द्र भी शुरू किया गया है। एक नए केन्द्र की स्थापना संत गुलाबराव महाराज महिला मंडल के सहयोग से की गयी।

अमरावती –

अमरावती शहर में तीन केन्द्रों पर संस्कार वर्ग आयोजित किये गए। इसके साथ ही रामनवमी और हनुमान जयंती के उत्सव भी संपन्न हुए। उर्मिला कलंत्री तथा रेखा भुतडा ने इस आयोजन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी।

अचलपुर –

अचलपुर में १५ अप्रैल से १ मई की अवधि में अलका देसाई के नेतृत्व में ग्रीष्मकालीन संस्कार वर्ग का आयोजन किया गया। इसमें मल्लखम्ब, कराटे आदि विषयों का प्रशिक्षण दिया गया।

चिखली –

स्थानीय आदर्श कॉन्वेंट विद्यालय में गीता जयंती का उत्सव मनाया गया। महाभारत के पात्रों की वेशभूषा स्पर्धा में ७० विद्यार्थियों ने भाग लिया। गीता आरती और पसायदान के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

शेगाँव –

गीता जयंती के उत्सव के निमित १२वें और १५ वें अध्याय का सामूहिक पठन किया गया। बड़ी संख्या में महिलाओं ने हिस्सा लिया।

अमरावती –

स्थानीय मदर्स पेठ स्कूल में विद्यार्थियों ने १२वें अध्याय का सामूहिक पठन किया। इसके पश्चात् संध्याकाल में राधाकृष्ण मंदिर में संपूर्ण गीता के सामूहिक पाठ का आयोजन किया गया।

दिल्ली

गीता परिवार दिल्ली के आदर्श नगर के मजलिस पार्क समुदाय भवन में श्रीमती सीतादेवीजी के सान्निध्य में बाल संस्कार शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में आठ से सोलह वर्ष के १७५ बालक–बालिकाएं उपस्थित थे। इस शिविर की दिनचर्या के साथ–साथ सूर्यनमस्कार व चित्रकला स्पर्धा का आयोजन भी किया गया, जिसमें अर्जुन, चिन्मय, आन्या, आदित्य, सावन, गौतम, नीलम एवं सुचित्रा ने बहुत सुन्दर चित्र बनाये। उन्हें पुरस्कृत किया गया। आदरणीय सत्येन्द्रजी मांगलिक ने योग दिवस के पावन पर्व पर गीता परिवार की एवं योग दिवस की महत्ता बतलाई। इस शिविर में श्रीमती सरिता रानी एवं श्री. चंदन जिंदल का विशेष सहयोग रहा।

व्याख्यान

कार्याध्यक्ष डॉ. संजयजी मालपाणी के **'दो शब्द माँ के लिए, दो शब्द पिता के लिए'** व्याख्यान और **'मिले सुर मेरा तुम्हारा'** टॉक–शो का आयोजन मलकापुर, चिखली, रिसोड, कलंब, पिंपलगाव बसवंत, चोपडा, नंदुरबार, पाचोरा, शिरपुर, मनमाड, औरंगाबाद और विदर्भ के अनेक शहरों में संपन्न हुआ। **लखनऊ के श्री आशु गोयल** ने भी उत्तर प्रदेश के कई शहरों में 'दो शब्द...' का व्याख्यान प्रस्तुत किया।

राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्या **सौ. रेखा मूंदड़ा** द्वारा कथाकथन के सत्र मुंबई, पुणे, निजामपुर, बुरहानपुर, तलोदा में संपन्न किये गये।

पुणे गीता परिवार की सक्रिय सदस्या **सौ. अंजली तापड़िया** के व्याख्यान **'उमलती मुले–सुगन्धित फुले'** और **'जीवन एक आनंदमयी यात्रा'** पुणे, निगडी और कोटा में संपन्न हुए।

गीता परिवार के राष्ट्रीय विस्तारक पं. अशोक पारीक के 'हम होंगे कामयाब' विशेष व्याख्यान के आयोजन सेलू, चिंचवड आदि शहरों में संपन्न हुए।

गीता परिवार समाचार

सामाजिक क्षेत्र में विशेष योगदान हेतु

श्री रामेश्वर जी काबरा को स्वामी विवेकानन्द पुरस्कार!

सामाजिक क्षेत्र में सेवारत महानुभावों को गीता परिवार प्रतिवर्ष स्वामी विवेकानन्द पुरस्कार से सम्मानित करता है। राष्ट्र निर्माण में उल्लेखनीय योगदान देनेवाले सेवाव्रती सज्जनों से सभी को प्रेरणा मिलती है।

इसी क्रम में इससे पूर्व संस्कृत के विद्वान प्रज्ञाभारती श्री श्रीधर भास्कर वर्णेकरजी, योगाचार्य श्री अय्यंगारजी, क्रीड़ा क्षेत्र के श्रीधरजी राजगुरु, हिंदी के विद्वान श्री घाणेकर जी जैसी विभूतियों को सम्मानित किया जा चुका। इस वर्ष का स्वामी विवेकानंद पुरस्कार श्री रामेश्वरजी काबरा को दिया गया। आपने एक सफल उद्योगपति होने के साथ-साथ राष्ट्र निर्माण के कार्य में जो योगदान दिया, वो अभिनंदनीय ही नहीं, अनुकरणीय भी है। अखिल भारतीय माहेश्वरी महासभा, नेपाल मारवाड़ी सम्मेलन, भारत विकास परिषद, वनबन्धु परिषद आदि संस्थाओं ने आपके नेतृत्व में सफलता के नए आयाम स्थापित किये। गीता परिवार के स्थापना काल से ही आप इस संस्था से जुड़े रहे। मुंबई की केशवसृष्टि और रामरत्ना विद्यालय के निर्माण में आप का योगदान सर्वविदित है। सात्त्विक आचरण, मृदुभाषी और न्यायप्रिय स्वभाव श्री काबराजी की विशेषताएँ हैं। आपका पूरा जीवन ही गीता परिवार के पंचसूत्रों पर आधारित रहा है। श्री रामेश्वरजी काबरा को ६ जुलाई २०१५ को पुणे में श्रद्धेय स्वामी गोविंददेव गिरि जी महाराज के करकमलों द्वारा स्वामी विवेकानंद पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

योग प्रशिक्षण में

जयसिंगपुर ने उल्लेखनीय कीर्तिमान स्थापित किया!

* ६१ स्कूलों के ५००० छात्र प्रज्ञा संवर्द्धन योग से लाभान्वित!

जयसिंगपुर में प्रज्ञा संवर्द्धन योग प्रशिक्षण का कीर्तिमान – राष्ट्रीय कार्य विस्तारक श्रीमती प्रमिलाजी माहेश्वरी परिश्रम, लगन और समर्पण का जीवंत प्रतीक बन गयी हैं। जयसिंगपुर में उनके नेतृत्व में प्रज्ञा संवर्द्धन योग के प्रशिक्षण का अद्भुत प्रकल्प लिया गया। गीता परिवार के इस उपक्रम को प्रशासन का भी सहयोग प्राप्त हुआ। शिक्षाधिकारी (माध्यमिक) सौ. ज्योत्स्ना शिंदे को प्रमिलाजी एवं अन्य कार्यकर्ताओं ने प्रज्ञा संवर्द्धन योग की प्रक्रिया से होने वाले लाभ की जानकारी दी। फलस्वरूप शिक्षाधिकारी ने सभी विद्यालयों के लिए इसकी अनुमति दे दी। नगर परिषद शिक्षण मंड़ल के अंतर्गत १० विद्यालयों, जिला परिषद की एक स्कूल, ३ हाईस्कूल एवं १ महाविद्यालय के साथ कुल ६१ स्कूलों में प्रज्ञा संवर्द्धन योग के प्रशिक्षण को आरम्भ किया गया। सबसे पहले शिक्षकों और कार्यकर्ताओं को दो अलग-अलग प्रशिक्षण शिविरों में प्रशिक्षित किया गया। इन शिविरों में प्रशिक्षित शिक्षकों ने ५५०० बच्चों को यह योग सिखाया। जयसिंगपुर महाविद्यालय के विशाल प्रांगण में ५००० बच्चों ने प्रज्ञा संवर्द्धन और सूर्यनमस्कार का सामूहिक प्रात्यक्षिक दिखा कर सभी को विस्मित कर दिया। इस कार्यक्रम में गीता परिवार के कार्याध्यक्ष डॉ. संजयजी मालपाणी भी उपस्थित थे। उन्होंने प्रमिलाजी की मुक्तकंठ से सराहना की। योग संवर्द्धन का ये अभियान सभी के लिए अनुकरणीय है। इस अनूठे प्रकल्प के लिए गीता परिवार, जयसिंगपुर को बहुत-बहुत बधाई और भविष्य के लिए शुभकामनाएँ।

गीता परिवार, लखनऊ के संस्कार शिविर से १६०० बच्चे लाभान्वित!

परम पूज्य स्वामी गोविन्ददेव गिरि जी द्वारा स्थापित गीता परिवार २१ वर्षों से निरन्तर बालक-बालिकाओं में संस्कारों के बीजारोपण का कार्य कर रहा है। गीता परिवार, लखनऊ विगत १६ वर्षों से लखनऊ नगर एवं उत्तर प्रदेश के अनेक जिलों में ''**साप्ताहिक बाल संस्कार केंद्र**'' एवं ''**संस्कार पथ**'' नाम के संस्कार वर्गों का आयोजन नियमित रूप से करता है।

कार्यकर्ता प्रशिक्षण :-

प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी इस भागीरथी गंगा को अधिक से अधिक बालकों तक पहुँचाने का संकल्प यहाँ के निष्ठावान कार्यकर्ताओं ने लिया। इस हेतु क्षेत्रीय कार्यकर्ताओं का आवासीय शिविर 'संस्कार संयोजन' का आयोजन ३/४/२०१५ से ५/४/२०१५ तक किया गया; जिसमें लगभग १०० कार्यकर्ताओं ने भाग लिया। प्रशिक्षण के दौरान ३२ ''**संस्कार पथ**'' शिविरों की तिथि व स्थान निर्धारित किये गये। संस्कार शिविरों को और अधिक प्रभावी बनाने के हेतु एवं उनकी संख्या बढ़ाने के लिए इस वर्ष गीता परिवार, लखनऊ द्वारा एक और नया प्रयोग किया गया।

संस्कार पावर टीम :-

संचालित केन्द्रों में आ रहे बालक – बालिकाओं में से लगभग २० मेधावी बालक-बालिकाओं का चयन भिन्न-भिन्न केन्द्रों से किया गया। इन्हे ''**संस्कार पावर टीम**'' (SPT) नाम दिया गया। उनके लिए एक विशेष प्रशिक्षण शिविर रखा गया। विपरीत परिस्थितियों का सामना करने और परिवार में सामंजस्य बिठाने की सूक्ष्म बातें भी बताई गयी। इन बच्चों ने उत्साहपूर्वक इस नई व कठिन चुनौती को स्वीकार किया।

लखनऊ गीता परिवार की सहसम्पर्क प्रमुख कु. नेहा जयसवाल को (SPT) प्रबंधन का जिम्मा दिया गया। केंद्र के युवा कार्यकर्ता अभिनव अवस्थी को (SPT) का वर्ष २०१५ हेतु कप्तान बनाया गया। अभिनव भैया के साथ (SPT) सदस्यों ने अपने द्वारा लिए गए संकल्प को पूर्ण निष्ठा, उत्साह व सफलता के साथ पूर्ण किया। जिससे इस वर्ष बड़ी संख्या में ''**संस्कार पथ**'' शिविरों का आयोजन हो सका एवं ''**संस्कार पथ**'' की गुणवत्ता को उत्कृष्ट मानकों तक पहुँचाया जा सका।

''**गीता परिवार**'' के राष्ट्रीय विस्तारक श्रीमान जितेन्द्र भैया ने लखनऊ नगर के बाहर होने वाले सभी शिविरों की एवं ''**गीता परिवार**'' लखनऊ के सम्पर्क प्रमुख श्रीमान अनुराग भैया ने लखनऊ नगर के अन्तर्गत होने वाले सभी शिविरों के आयोजन की जिम्मेदारी संभाली।

मई २०१५ से ''**संस्कार पथ**''की भागीदारी गंगा अपने विशाल प्रवाह के साथ चली एवं जून तक अधिकतम शिविर ग्रीष्मकालीन अवकाश में पूरे कर लिए गए। जिन स्थानों पर ''**संस्कार पथ**''का आयोजन

विद्यालयों की उपलब्धता के कारण ग्रीष्मकालीन अवकाश के बाद भी संभव था, वहां जुलाई व अगस्त माह में शिविरों का आयोजन करने का निश्चय किया गया।

सभी ''**संस्कार पथ शिविर**'' विभिन्न स्थानों पर ३ से ७ दिन के किये गए; जिसमें क्षेत्र के बालक बालिकाओं ने बड़े ही उत्साह के साथ भाग लिया। शिविर में उन्हें संस्कारों के जागरण हेतु विभिन्न बातें मनोरंजक विधियों से सिखाई गयी; जैसे प्रातः उठ कर विद्यालय जाने से पूर्व पूजा करना, अपने से बड़ों को आप कहकर बुलाना, जीवों को किसी प्रकार भी न सताना आदि।

विभिन्न विषयों पर जाग्रति लाने हेतु बालक और बालिकाओं के बीच टॉक–शो भी कराये गये जिससे उन्होंने सूक्ष्मता से बहुत से विषयों का चिंतन किया। साथ ही ''**जुड़ो और कराटे**'' एवं नित्य २० मिनट का ध्यान सभी शिविरों का आवश्यक एवं आकर्षक कार्यक्रम रहा। ७ दिनों में **भगवद्गीता का एक सम्पूर्ण अध्याय बालकों को कंठस्थ कराया गया।** अनेक मजेदार प्रतियोगिताएँ भी करवाई गई जैसे बालक–बालिकाओं को ध्रुव–साधना और अर्जुन–साधना तथा प्रश्नोत्तरी, अधूरा चित्र पूरा करो आदि। इनमें बालकों का उत्साह चरमोत्कर्ष पर पहुंच जाता था।

शिविर के बौद्धिक सत्र के रूप में गीता परिवार के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष डॉ. आशू गोयल नित्य बालकों से संस्कार पथ नामक विषय पर चर्चा करते; जिसमें गीता परिवार को पंचसूत्रों के माध्यम से उसमें दैवीय सद्गुण विकसित करने की प्रेरणा दी जाती थी।

इस प्रकार इस ग्रीष्मावकाश में गीता परिवार, लखनऊ द्वारा विभिन्न स्थानों पर कुल १७ शिविर आयोजित किये गये जिनसे करीब १६०० बालक बालिकाएं लाभान्वित हुए। इनमें लखनऊ में विभिन्न स्थानों पर ७ शिविर आयोजित किये गये जिनमें ६ से १४ वर्ष तक के ६३० बालकों ने भाग लिया। इसी प्रकार गोण्डा में १००, सिघोली में ६५, फैजाबाद में ६५, इलाहाबाद में २००, रामनगर में १३५, राजापुर में १७५, शाहपुरा में ९०, भोटसुआ में ७२, राजाजीपुरम में ५० तथा गढ़ी किनोरा शिविर में ३० बालकों को अनेक विधाओं में प्रशिक्षित किया गया।

नवीन प्रयोग :–

इस बार गीता परिवार, लखनऊ द्वारा एक और नवीन प्रयोग किया गया। इसके अन्तर्गत संस्कार पथ शिविरों से पांच–पांच होनहार बालक–बालिकाओं का चयन किया गया और उन्हें ३० जून को एक विशेष अग्रस्तरी शिविर में संस्कार तरंग के लिए चुना गया।

संस्कार तरंग २०१५ बाल संस्कार शिविर अत्यंत सफलतापूवर्पक संपन्न हुआ। २२ बाल संस्कार केन्द्रों से चुने हुए लगभग १५० शिविरार्थी बच्चों के साथ इस शिविर का आयोजन 'ड्रीम वर्ल्ड वॉटर पार्क' कानपुर रोड में हुआ। इस शिविर का मुख्य केन्द्र Teenage (किशोरावस्था) में बालक–बालिकाओं को आने वाली समस्याएं एवं उनका समाधान बताना रखा गया। उनके लिए 'क्या सही है और क्या गलत' यह सब गीता परिवार के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष डॉ. आशु गोयल तथा श्री राजेन्द्र गोयल द्वारा एक talk show में बहुत ही सुनियोजित PPT Presentation के जरिये बताया गया। जो topics बताये गए वे किशोर अवस्था वाले बच्चों के लिए बहुत ही महत्त्वपूर्ण रहे।

गीता परिवार, औरंगाबाद : वासंतिक वर्ग सम्पन्न

प्रति वर्ष की भाँती इस वर्ष भी औरंगाबाद गीता परिवार द्वारा वासंतिक वर्ग २०१५ का आयोजन अत्यन्त उत्साहपूर्ण वातावरण में दि. १० अप्रैल से १० मई के मध्य करीब ११ केन्द्रों पर आयोजित किये गये।

बालकों एवं कार्यकर्ताओं की सुविधा को ध्यान में रखते हुए इस बार एक बार में ३-४ केन्द्रों पर वर्ग संचालित किये गये। तदनन्तर कुछ दिनों के 'खण्ड' के बाद अन्य केन्द्रों पर वर्ग चले।

इस बार वासन्तिक-वर्ग नगर के मित्रनगर, सिडको N3, गारखेड़ा, ज्योतिनगर, महेश नगर, N1, N3, शिवाजी नगर, समर्थ नगर, बंशीलाल नगर आदि केन्द्रों में आयोजित किये गये।

इस बार वासंतिक-वर्ग में उपरोक्त केन्द्रों पर बालकों में संस्कार रोपण की दृष्टि से कई कार्यक्रम सम्पन्न हुए। इनके अन्तर्गत प्रातःकालीन संस्कार फेरी के पश्चात दिन में बालकों को देशभक्ति के गीत, सूर्यनमस्कार, गीता का आठवाँ अध्याय, शिवताण्डव स्तोत्र एवं भजन, भाषण आदि का शुद्ध उच्चारण एवं प्रस्तुति करण सिखाया गया। साथ ही इस बार बालकों को पर्यावरण का महत्त्व समझाया गया तथा हर बालक ने एक पेड़ लगाकर उसकी देखभाल सीखी। इन सभी कार्यों में बालकों ने अत्यधिक उत्साह दिखाया।

गारखेड़ा केन्द्र के बालकों को गौशाला का भ्रमण करवाया गया तथा 'हमारे लिये गौमाता का महत्त्व' से परिचित करवाया गया। बालकों अपने हाथों से गायों का स्पर्श किया तथा घास खिलाई।

उक्त विभिन्न कार्यक्रमों को सफल बनाने में सौ.स्मिता मूंदड़ा, सौ. साया साबू, सौ. कविता नावंदर, सौ. बबिता करवा, सौ. सूरज होलानी, सौ. विजया काबरा, सौ.प्रीति लाहोटी, सौ. सीमा लोया, सौ. मधुबाला केला, विजया खटोड़ आदि ने पूर्ण परिश्रम के साथ अपना योगदान दिया।

वासन्तिक वर्ग के उपरोक्त समस्त कार्यक्रम श्री सतीशजी साबू एवं सौ. रमा साबू के मार्ग दर्शन एवं सद्प्रयत्नों से सम्पन्न हुए।

– सौ. रमा साबू, औरंगाबाद

गीता परिवार, आर्वी द्वारा सम्पन्न कार्यक्रम

गीता परिवार आर्वी द्वारा बालकों में संस्कार रोपण की दृष्टि से अनेक कार्यक्रम सम्पन्न किये गये। उनमें से प्रमुख इस प्रकार हैं :–

श्रीकृष्ण जन्मोत्सव पर कृष्णभक्ति एवं देशभक्ति नृत्य स्पर्धा का आयोजन किया जाता है। जिसमें आर्वी के सभी स्कूलों के द्वारा ३० से ४० प्रकार के नृत्य प्रस्तुत किये जाते हैं। विजेताओं को पुरस्कृत किया जाता है। १० वीं एवं १२ वीं की परीक्षा में अव्वल आनेवाले विद्यार्थियों का सम्मान किया जाता है। दूसरा कार्यक्रम गीता जयंती पर हुआ, जिसमें रंग भरो स्पर्धा का आयोजन किया गया। आर्वी शहर के १०६७ विद्यार्थियों ने उसमें भाग लिया जो अब तक का सब से बड़ा कीर्तिमान था। इस अवसर पर १५ सर्वश्रेष्ठ चित्रों को पुरस्कृत किया गया। इसी अवसर पर श्रीमद्‌भगवद्‌ गीता के बारहवें अध्याय के कंठस्थीकरण का आयोजन भी किया जाता है। साथ ही श्रोता प्रश्नमंच का आयोजन किया जाता है; जिसमें भगवद्‌गीता एवं महाभारत से प्रश्न के उत्तर पर भगवद्‌गीता की एक प्रति पुरस्कार में दी जाती है।

कृष्ण–भक्ति–देश–भक्ति नृत्यस्पर्धा समूह चित्र

परिवार का तीसरा कार्यक्रम युवा दिवस पर आर्वी आर्ट्स, कॉमर्स एवं सायन्स कॉलेज के तथा गीता परिवार का संयुक्त कार्यक्रम रखा है जिसमें वाद–विवाद स्पर्धा के साथ विवेकानन्द प्रश्नमंजूषा का आयोजन किया जाता है। जिसमें एक प्रश्न के उत्तर पर विवेकानंन्दजी की साहित्य एक पुस्तक पुरस्कार के रूप में दी जाती है।

चौथे कार्यक्रम के रूप में विश्व महिला दिवस ८ मार्च को मनाया जाता है। इस बार Best from Waste तथा भजन अंताक्षरी एवं 'नारी शक्ति' प्रश्नमंजूषा आदि का आयोजन किया गया। विजेताओं को पुरस्कार के बाद डॉ. कालिन्दी राणे द्वारा 'स्वाइनफ्लू एवं उपाय' विषय पर मार्गदर्शन किया गया।

पांचवा एवं सबसे महत्त्वपूर्ण कार्य बालसंस्कार कार्यशाला एवं नेतृत्व निर्माण कार्यशाला का भी गजानन महाराज मंदिर जाजूवाड़ी में पंद्रह दिवसीय आयोजन किया गया। इस अवसर पर पंद्रह दिनों तक सिखाये जाने वाले उपक्रमों पर प्रतियोगिता एवं सर्वश्रेष्ठ विद्यार्थी का चयन किया जाता है। इस बार का सर्व श्रेष्ठ विद्यार्थी का पुरस्कार रिद्धि जोशी को दिया गया। मापदंड इस प्रकार होता है कि जो पन्द्रह दिन ठीक

कार्यक्रम में भ्रामरी प्राणायाम करते बालक

...शेष अगले पृष्ठ पर

धुलिया में नवाचार : बाल भागवत कथा का आयोजन!

गीता परिवार, धुलिया द्वारा इस बार 'बाल-संस्कार वर्ग' के स्थानपर 'बाल भागवत कथा' का विशेष आयोजन किया गया। इसमें कथा वाचक **पं.अशोकजी पारीक (भैयाजी)** ने भागवत के बालोपयोगी प्रसंगों की प्रस्तुति इतनी रोचक ढंग से की कि श्रोता-बालकों ने न केवल इनका ध्यान से श्रवण किया, अपितु कृष्ण की बाललीलाओं के पीछे छिपे भारतीय संस्कृति के मूलतत्त्वों एवं जीवन-मूल्यों को भी सहज ही ग्राह्य कर लिया जैसा कि कथा के उपरान्त श्रोता-बालकों की बातों से ज्ञात हुआ। कथा में पूर्ण अवधि तक करीब ४०० बालकों ने उत्साह से भाग लिया।

संस्कार-वर्ग में कथा की अवधि में ही बालकों ने बड़े उत्साह से ''महिषासुर स्तोत्र'' सीखा तथा 'कौन बनेगा कृष्ण भक्त', चित्र रंगभरो प्रतियोगिता, भजन-गायन आदि स्पर्धाओं में बढ़चढ़ कर भाग लिया।

ज्ञातव्य है कि कथा से पूर्व धुलिया शहर में पारम्परिक ढ़ंग से भव्य शोभा यात्रा निकाली गई, जिसे बालभक्तों के साथ ही विभिन्न प्रेरणादायी झांकिया भी लोगों की चर्चा के विषय रहे।

उक्त विभिन्न कार्यक्रमों को सफलता पूर्वक सम्पन्न करवाने में गीता परिवार, धुलिया के वरिष्ठ कार्यकर्ताओं का पूर्ण सहयोग रहा। इनमें प्रमुख रूप

से सर्वश्री संजयजी मूंदड़ा, लता आगीवाल, पद्मा भदादे, मंगला फाफट, रेखा मूंदडा, मनीषा मूंदडा, उषा काबरा, रूपाली मालपाणी, नयना दुप्पड़, स्नेहा जोशी एवं स्मिता पेड़िवाल आदि के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

गीता परिवार आर्वी (अगले पृष्ठ का शेष....)
समय पर उपस्थित हो, सूर्य नमस्कार, बारहवाँ अध्याय कंठस्थीकरण, खेल, मंगल स्मरण, प्रश्नमंजूषा सभी में सर्व प्रथम स्थान प्राप्त किया हो, ऐसे विद्यार्थी को सर्वश्रेष्ठ विद्यार्थी का पुरस्कार मिलता है। नेतृत्व निर्माण कार्यशाला में सात दिवसीय कार्यक्रम गीता परिवार द्वारा दिये गये कार्यक्रमानुसार लेते हैं। इस बार गीता परिवार आर्वी ने इसमें एक वृद्धि करते हुए बच्चों को प्रशासन संवर्धन एवं आत्मसंरक्षण के गुर सिखाए। मार्शल आर्ट के लिये स्थानीय ब्लैक बेल्ट शिक्षिका श्रीमती मडगे ने सहयोग प्रदान किया। दोनों कार्यशालाएँ सफल रही, जिसमें ५३ बच्चे संस्कार कार्यशाला में और १५ बच्चे नेतृत्व कार्यशाला में सहभागी हुए। **नागपुर, रिसोड, वाशीम, खामगांव, परतवाडा में भी ग्रीष्मकालीन वर्ग संपन्न हुए।**

गीता परिवार, गुलबर्गा शिविर में १००० बालक संभावित

गीता परिवार कलबुर्गी (गुलबर्गा) की ओर से १ अप्रैल से १५ अप्रैल २०१५ तक बाल संस्कार शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें १११ बच्चों ने भाग लिया उसमें बच्चों को श्लोक, ध्यान, स्वीमिंग, बैडमिन्टन, कराटे, फुटबॉल, टेबलटेनिस, क्रिकेट का विशेष प्रशिक्षण दिया गया। बच्चों ने बहुत उत्साह से सीखा और बहुत ही प्रभावित हुए। अगले साल के लिए ७६ बच्चों ने अपना नाम आरक्षित किया। इस कार्यक्रम को सफलतापूर्वक संपन्न करने के लिए गीता परिवार कलबुर्गी शाखा की पूर्वाध्यक्षा श्वेता संतोषजी मालू, अध्यक्षा सारिका प्रकाश जी बजाज, सचिव ममता जी गोयल, उपाध्यक्षा रेखा अरविंद जी तोषनीवाल, सहसचिव संतोष श्रीनिवास जी नोगजा, कोषाध्यक्षा आरती मधुसूदन जी मालू एवं सभी कार्यकारिणी सदस्यों ने सहकार्य किया। अत्यंत परिश्रम से किया।

इसके बाद दूसरा एक और कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसका नाम था प्रज्ञा संवर्धन (Brain Development) जिसे सिखाने के लिए जयसिंगपुर निवासी श्रीमती प्रमिला जी माहेश्वरी ने आकर बालकों को प्राणायाम, मुद्रा अभ्यास का भी ज्ञान दिया। इसमें चंद्रकांत पाटील स्कूल के ७०० बच्चों को और एस.आर.एन. मेहता स्कूल के ३०० बच्चों को और कार्यकताओं ने सहर्ष भाग लिया।

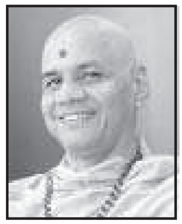

।। जय श्रीकृष्ण ।।

राजस्थानी महिला मंडल, सेलू द्वारा आयोजित

प.पू. स्वामी श्री गोविंददेव गिरि जी महाराज के

दिव्य स्वरों से पावन स्थल गुरुवायुर (केरल) में)

श्रीमद् भागवत कथा

(कथा कालावधि : दि. २०/०१/२०१६ से दि. २६/०१/२०१६)

विशेष :– इस आयोजन में **प.पू. गुरुदेव का ६७ वां जन्मदिवस** भी है। इस उपलक्ष्य में ६७ यजमानों द्वारा (न्योछावर राशि रु. ११०००/–) कथा का आयोजन किया है। आप सपरिवार इस पुण्ययोग का लाभ लें। कृपया अपनी स्वीकृति शीघ्र भेज कर व्यवस्था में सहयोग करें। धन्यवाद!

कथा आयोजन कालावधि में गुरुवायुर निवास, भोजन	७ दिन रु. ४५००/–
कथा आयोजन कालावधि में गुरुवायुर केवल भोजन व्यवस्था	७ दिन रु. ११००/–
कथा आयोजन कालावधि में गुरुवायुर स्वतंत्र A/c रूम के लिये	७ दिन रु. ९१००/–
कथा आयोजन कालावधि में गुरुवायुर स्वतंत्र Non A/c रूम के लिये	७ दिन रु. ७०००/–

विशेष :– इस कथा का संस्कार चॅनैल पर लाईव्ह टेलिकास्ट होगा। दि. २० जनवरी से २४ जनवरी दोपहर ३ से ७ ; २५ जनवरी को दोपहर २ से ७ ; और २६ जनवरी को सुबह ९ से १२ बजे तक।

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें।

सौ. वंदना सीताराम जी मंत्री (मो. ९४२२१७६२४१), सौ. सरला भागचंदजी मालाणी (मो. ९४०३२१६५०२), सौ. चंदा भिकुलाल जी कासट (मो. ९४२३०३१९५४), सौ. राजकंवर बद्रीनारायणजी डालिया (मो. ९४२२११०३६३)

गीता परिवार, पुणे की विशेष उपलब्धि

श्री हनुमान कथा सानन्द सम्पन्न

इस वर्ष गीता परिवार पुणे द्वारा बालकों के साथ ही उनके सम्पूर्ण परिवार के कल्याणार्थ प.पू. स्वामी श्री गोविंददेव गिरि जी महाराज के सान्निध्य में हनुमान कथा ज्ञान यज्ञ का आयोजन किया गया। समस्त भक्तों ने इसे अपना एवं बालकों का सौभाग्य माना।

प्रथम दिन भव्य शोभायात्रा, ग्रंथ पूजन, श्री हनुमान पूजन, आरती, दीप प्रज्ज्वालन के साथ कथा आरम्भ हुई। कार्यक्रम के अन्तर्गत दिन में कथा ज्ञानयज्ञ एवं प्रातः सायं संस्कार वर्ग के निर्धारित कार्यक्रमों का आयोजन सम्पन्न हुआ।

द्वितीय दिवस को कथा से पूर्व गीता परिवार के बालकों द्वारा प.पू. स्वामीजी महाराज के समक्ष निर्भय होकर श्रीमद्भगवतगीता के १२ वें अध्याय का पाठ किया गया। इन्हे तथा दसवीं परीक्षा में संस्कृत विषय में सर्वोच्च अंक प्राप्त करने वाले बालकों को पूज्यवर द्वारा सम्मानित किया गया। इसी दिन सुबह युवकों को व्यावसायिक मार्गदर्शन प्रदान किया गया। चौथे दिवस प्रातः शिविरार्थियों ने सूर्य नमस्कार स्पर्धा में भाग लिया। मध्याह्न सत्र में महिलाओं के लिये कलात्मक कार्यशाला सम्पन्न हुई। इसी दिन कथा सत्र में गीता परिवार द्वारा प्रकाशित दो पुस्तकों का विमोचन एवं गीता परिवार की विभिन्न गतिविधियों का स्लाइड पर प्रदर्शन किया गया, जिसे सबने सराहा। कथा की आरती से पूर्व गीता परिवार के कोषाध्यक्ष श्री. श्रीवल्लभजी व्यास की ७१वीं वर्ष पूर्ति एवं श्री. सत्यनारायण जी मुंदड़ा के विवाह की रजत जयन्ती पर पू.स्वामीजी महाराज ने आशीर्वाद प्रदान किया।

कथा के अंतिम सत्र में प्रातः युवकों के लिये **''तुम्हीच तुमचे शिल्पकार''** इस विशेष व्याख्यान का आयोजन लिया गया था। सभी युवकों का ये सद्भाग्य था कि स्वयं प.पू. स्वामीजी ने युवकों का मार्गदर्शन किया। सम्पूर्ण कथा के आयोजन में कार्यकर्ता, यजमान, सहयोगी संस्था का सहयोग रहा। आभार प्रदर्शन गीता परिवार, पुणे के अध्यक्ष श्री लक्ष्मण जोशीजी ने किया। सूत्र संचालन सौ. स्वाति वालिंबे द्वारा हुआ। श्रद्धेय प.पू. स्वामीजी के मुखारविंद से हनुमान कथा का निरूपण हुआ जिसे श्रवण करने का सौभाग्य गीता परिवार के परिजनों को मिला।

– सौ. स्वाति वालिंबे, पुणे

यज्ञशाला का उद्घाटन समारोह सम्पन्न!

ब्रह्मा सावित्री वेदविद्यापीठ, पुष्कर (राजस्थान) में श्रीमान् सतीशजी तापड़िया (भागीरथमल नर्मदादेवी तापड़िया चैरिटेबल ट्रस्ट, जयपुर) के द्वारा निर्माण कराये गये ''यज्ञशाला'' का उद्घाटन परम पूज्य स्वामी श्री गोविंददेव गिरि जी महाराज के करकमलों द्वारा श्रावण शुक्ल षष्ठी तदनुसार दिनांक २०.०८.२०१५ दिन गुरुवार को हुआ। इस अवसर पर यज्ञशाला में वेदमूर्ति आचार्य श्री महेश जी नन्दे के आचार्यत्व में हवनात्मक रुद्र महायज्ञ का आयोजन भी हुआ, जिसके प्रधान यजमान श्री सतीशजी तापड़िया रहे। यज्ञ की पूर्णाहुति के पश्चात् प.पू. स्वामी श्री गोविंददेव गिरि जी महाराज ने अपने प्रवचन के माध्यम से सबका उत्साहवर्धन करते हुए कहा कि भारत के संस्कृति की रक्षा यदि ठीक से करनी है तो वेदाध्ययन अवश्य करें और यदि वेदाध्ययन नहीं कर सकते हैं तो किसी भी प्रकार से वेद पढ़ने वालों की सेवा जरूर करें, क्योंकि वेदाध्ययन के अभाव में यज्ञ सम्पन्न हो पाना असम्भव है। यज्ञ के अभाव में धर्म का ऱ्हास तथा अधर्म का विकास होगा। इसलिये वेद पढ़ना भी आवश्यक है, इसमें सबका हित है–''वेदाः सर्वहितार्थाय''। स्वामीजी ने यह भी कहा कि लगभग एक हजार वर्ष मुसलमानों तथा दो सौ वर्ष अंग्रेजों के राज्य करने के बाद भी भारत की संस्कृति बची रही इसका मूल कारण वेद का अध्ययन तथा वेद की सेवा ही है। इस अवसर पर विद्यापीठ के अध्यक्ष श्री आनन्दजी राठी ने स्वागत भाषण दिया तथा विद्यापीठ ज्ञापन किया। कार्यक्रम का मंच संचालन विद्यापीठ के आचार्य डॉ. ब्रजबिहारी पाण्डेयजी ने किया।

ॐ

।। वेदाः सर्वहितार्थाय ।।

महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान
रौप्य महोत्सवी वर्ष का वार्षिक कार्यनिवेदन
(दि. ०१/०४/२०१४ से ३१/०३/२०१५ तक)

सम्माननीय सदस्यगण,

सादर जय श्रीकृष्ण!

सर्वशक्तिमान के चरणारविंद में आस्था एवम् श्रद्धापूर्ण विनम्र नमन करते हुए सर्वांतर्यामी प्रभु के समक्ष 'महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान' के 'पच्चीसवें' वर्ष का कार्य–विवरण प्रस्तुत करते हुए, प्रसन्नता का अनुभव कर रहा हूँ। वैदिक संस्कृति की सेवा के कार्यकलापों का विगत पच्चीस वर्षो का संक्षिप्त विवरण, जगन्नियता परमात्मा तथा उसी के प्रतीक स्वरूप जनता जनार्दन के समक्ष प्रस्तुत करने का कर्तव्य तो है ही, साथ ही साथ विगत पच्चीस वर्ष की प्रमुख घटनाओं पर एक दृष्टि डालते हुए भूतकाल की गतिविधियों को उजागर करने का एक अल्प नेक प्रयत्न भी है। परिस्थिति अनुरूप प्राप्त स्रोतों के आधार पर, भविष्य–कालीन योजनाओं को रेखांकित कर उन्हें पूर्णावस्था तक ले जाने का सामूहिक प्रयास, समय की कसौटी पर विगत पच्चीस वर्ष में खरा उतरता देख, हृदय के भीतर संतुष्टि एवम् आनंद का भाव जागृत हो गया!

वर्ष १९९० में महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान का शुभारंभ किया गया। आरंभिक कुछ–एक वर्षो में विभिन्न प्रारूप बनते रहे एवम् उसकी योजनाओं पर मंथन भी होता रहा। इसी काल में स्थापना के मूल उद्देश्य को समर्पित कार्य अविरल चलते रहे।

इसी क्रम में कुछ वर्षों पश्चात् अनेक विशिष्ट घटनाक्रम होते रहे, जिसमें धुलिया में जगद्गुरु शंकराचार्य कांचीकामकोटि पीठाधीश प.पू. महास्वामी जयेंद्र सरस्वतीजी महाराज एवम् पदमभूषण महामंडलेश्वर पूज्यपाद गुरुदेव स्वामी श्री सत्यमित्रानंद गिरिजी महाराज की पावन उपस्थिति में प.पू. आचार्यश्री का 'षष्टिपूर्ति प्रकाशोत्सव' अनेक गणमान्यों के समक्ष संपन्न हुआ। उक्त कालखंड में महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान के अध्ययनरत छात्रों के पौरोहित्य से हरिद्वार स्थित 'भारतमाता मंदिर' के रजत जयंती समारोह के उपलक्ष्य में आयोजित २५१ कुंडीय 'चतुर्वेद महायज्ञ' एक विशेष घटना रही।

वर्ष २००९–२०१० में ग्राम सराई, ता. खुल्ताबाद, जि. औरंगाबाद (महाराष्ट्र) में स्थित योगेश्वर याज्ञवल्क्य वेदविद्या प्रतिष्ठान का महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान के साथ संलग्नीकरण, प्रतिष्ठान की व्याप्ति को दर्शाता है। इसी वर्ष श्री गौरांग वेदविद्यालय, कोलकाता के स्व–भवन निर्माण हेतु जमीन खरीदना, आरंभिक योजनाओं पर उपयुक्त दिशा के प्रवास–प्रयास को दर्शाता है।

प्रतिष्ठान की विस्तार–योजनाओं में वृंदावन में संत ज्ञानेश्वर वेदविद्यालय, वाराणसी में वे.मू. विश्वनाथ देव गुरुकुल तथा ऋषिकेश में गायत्री वेदविद्यालय का प्रारंभ मील का पत्थर साबित हुआ। इसी वर्ष सूडी (कर्नाटक) स्थित श्री जयेंद्र सरस्वती गुरुकुलम् का महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान से संलग्न हो जाना प्रतिष्ठान की अनन्य साधारण उपलब्धि थी। साथ–ही साथ वेदों की अनन्य साधारण उपयोगिता एवम् महत्त्व को संज्ञान में लेते हुए अभ्यासक्रम का अविभाज्य अंग बनाने का प्रयास, कवि कुलगुरु कालिदास संस्कृत विश्वविद्यालय, रामटेक (महाराष्ट्र) 'बी.ए. इन वैदिक स्टडीज' अभ्यासक्रम शैक्षणिक सत्र २०११–१२ से आरंभ करने के निर्णय के रूप में किया गया। यह समयानुसार उठाया गया एक सकारात्मक कदम ही तो था।

सन २०११–२०१२ का वर्ष इस कारण भी संस्मरणीय बन गया, जब आलंदी (पुणे) में संत गुलाबराव महाराज वैदिक महाविद्यालय के साथ विशेष रूप से जम्मू में महाराजा प्रतापसिंह वेदविद्यालय का शुभारंभ किया गया। साथ ही परभणी की आचार्य वेदशास्त्र पाठशाला महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान से संलग्न हो गयी। घटनाक्रम की एक चिर–स्मरणीय विशेषता यह भी रही कि श्री समर्थ संत महात्माजी वेदविद्यालय (ढालेगाँव) एवम् श्री सद्गुरु निजानंद महाराज वेदविद्यालय (आलंदी) महर्षि सांदीपनि वेदविद्यालय प्रतिष्ठान (उज्जैन) द्वारा 'पूर्णतया अनुदानित वेदविद्यालय' के रूप में घोषित किए गए। यह प्रतिष्ठान की व्यवस्था का अनुकरणीय प्रमाण है।

विस्तार, संकल्पना एवम् प्रारूप के अनुरूप हो ही रहा था। इसी प्रक्रिया में २०१२–२०१३ में वृंदावन, उत्तरप्रदेश में संत ज्ञानेश्वर वेदविद्यालय का भूमिपूजन समारोह उत्साह से संपन्न हुआ। इसी वर्ष श्री गौरांग वेदविद्यालय, कोलकाता अपने स्व–नव–निर्मित भवन में स्थांतरित हुआ। पूर्वोत्तर राज्य मणिपुर के जिला सेनापति के ग्राम चार हजारे, जहाँ **मणिपुर वेदविद्यापीठ का शुभारंभ एवम् विधिवत उद्घाटन कांची कामकोटि पीठाधीश्वर प.पू. महास्वामी जयेंद्र सरस्वतीजी महाराज** के आशीर्वाद से डॉ. श्री रूप किशोरजी शास्त्री, सचिव, महर्षि सांदीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान उज्जैन की उपस्थिति में **२१ फरवरी २०१३** को संपन्न हुआ।

वर्ष २०१३–२०१४ स्मृति–पटल पर विशेष रूप से अंकित है... इसी वर्ष प.पू. आचार्य स्वामी गोविंददेव गिरि जी महाराज का 'पट्टाभिषेक महोत्सव' हरिद्वार में गणमान्य महानुभावों एवम् संत महात्माओं की गरिमामयी उपस्थिति में संपन्न हुआ। घनपाठ–पारायण का विशेष आयोजन, श्री सद्गुरु निजानंद महाराज वेदविद्यालय, आलंदी के अध्यापक वे.मू. श्री. प्रशांतजी जोशी द्वारा संपन्न हुआ। प्रतिष्ठान से संलग्न वेदविद्यालय श्री विक्रम विनायक वेदविद्यालय का शुभारंभ ग्राम बिर्ला मंदिर जि. रायगढ़ (महाराष्ट्र) में होना पुन: आनंद एवम् संतुष्टि का क्षण था।

चौबीस वर्ष की वेदप्रतिष्ठान की दीर्घ सार्थक यात्रा के पश्चात् प्रतिष्ठान अपने रौप्यमहोत्सवी वर्ष का लेखा जोखा आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए हर्षानंद का अनुभव कर रहा है।

(१) वेदाध्ययन :–

प्रतिष्ठान द्वारा प्रेरित सभी वेदविद्यालयों में वेदाध्ययन अपने निर्धारित मानकों के साथ छात्रों के सर्वांगीण विकास की दृष्टि से वेदविद्या के प्रमुख लक्ष्य के साथ वर्तमान भविष्यकाल के परिवेश में संगणक, अंग्रेजी, संगीत आदि की शिक्षा एवं प्रात्यक्षिक पर भी ध्यान केंद्रीत कर रहा है। व्यवस्थापन संबंधी सभी पहलुओंपर गुणवत्तायुक्त प्रबंधन बनाए रखने के साथ, वेदविद्या के प्रचार– प्रसार संबंधी सतत चिंतन–मनन एवं कार्यकर्ताओं में उस हेतु उत्साह बनाये रखना तथा उत्तम वैदिक वक्ता निर्माण हो ऐसे प्रयास किये गये।

(२) विश्वविद्यालयीन परीक्षा :–

कवि कुलगुरु कालिदास विश्वविद्यालय, रामटेक की वर्ष २०१५ की परीक्षा के लिये इस वर्ष वेदाध्ययनरत कुल ५३ छात्रों ने आवेदन भेजे हैं, जिसमें कनिष्ठ पदविका २०, ज्येष्ठ पदविका २१, तथा बी.ए. इन वैदिक स्टडीज प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय वर्ष हेतु १२ छात्र हैं। इस हेतु अध्यापक, व्यवस्थापक, कर्मचारियों का पूर्ण सहयोग प्राप्त हुआ।

महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान – न्यासी मंडल २०१२–२०१५

–: पदाधिकारी :–

संस्थापक एवं अध्यक्ष – प. पू. स्वामी श्री गोविंददेवगिरि जी महाराज, पुणे।
उपाध्यक्ष– श्री. भागीरथजी लड्डा, मुंबई। **मंत्री –** श्री. राजेशजी मालपाणी, संगमनेर।
कोषाध्यक्ष – श्री. रमेशजी रामू, पुणे, **सहमंत्री –** श्री. राजगोपाल जी मिणियार, सोलापुर।

–: न्यासी :–

श्री. रामेश्वरलालजी काबरा (मुंबई), श्री. चंद्रकांतजी केले (धुलिया), श्री. राजकुमारजी अग्रवाल (पुणे), श्री. रामावतारजी जाजू (इंदौर), श्री. हर्षदभाई शहा (मुंबई), श्री. मधुसूदनजी झुनझुनवाला (मुंबई), श्री. विनीतजी सराफ (नई दिल्ली), श्री. जयप्रकाशजी बिहाणी (सेलु), श्री. कृष्णकांतजी रासकर (पुणे), श्री. जगदीशप्रसादजी सोंथलिया (सिकंदराबाद) पद्मश्री डॉ. श्री. विजयजी भटकर (पुणे), पद्मश्री श्री. बन्सीलालजी राठी (चेन्नई), प्रा. श्री. दत्तात्रयजी काळे (संगमनेर), डॉ. सौ. भाग्यलता पाटसकर (पुणे), वे. मू. श्री. महेशजी नंदे (पुष्कर), वे. मू. श्री. चंद्रभानूजी शर्मा (नई दिल्ली), श्री. विष्णुप्रसादजी गोयनका (काशीपुर), ॲड. श्री. रतनलालजी अटल (अमरावती), श्री. श्रीकृष्णजी मल्ल (कोलकाता), श्री. अरुणजी भांगडिया (हैदराबाद)

दि. ३१ मार्च २०१४ को समाप्त वर्ष में वेदविद्यालयों की संख्या निम्नानुसार २३ हो गई है।				
क्र.	**वेदविद्यालय**	**अध्यापक**	**छात्र**	**वेदशाखा**
१	श्री सद्गुरु निजानंद महाराज वेदविद्यालय, आलंदी	०३	४१	शुक्ल यजुर्वेद (माध्यंदिन)
२	श्री समर्थ संत महात्माजी वेदविद्यालय, ढालेगाव	०६	७०	*
३	श्री चतुर्वेदेश्वर धाम, सावरगांव (महाराष्ट्र)	०३	२७	**
४	जय जगदंबा वेदविद्यालय, खामगांव (महाराष्ट्र)	०१	१२	शुक्ल यजुर्वेद (माध्यंदिन)
५	ब्रह्मासावित्री वेदविद्यापीठ, पुष्कर (राजस्थान)	०२	३६	शुक्ल यजुर्वेद (माध्यंदिन)
६	श्री महर्षि दधीचि वेदविद्यालय, गोठमांगलोद (राज.)	०१	०६	पौराहित्य शुक्ल यजुर्वेद (माध्यंदिन)
७	श्रीराम वेदविद्यालय, धुलिया (महाराष्ट्र)	०१	२१	पौराहित्य शुक्ल यजुर्वेद (माध्यंदिन)
८	श्री गौरांग वेदविद्यालय, बारूली (प. बंगाल)	०२	४८	शुक्ल यजुर्वेद (माध्यंदिन)
९	वैदिक पौरोहित्य पाठशाला, जिंतुर (महाराष्ट्र)	०१	१७	शुक्ल यजुर्वेद (माध्यंदिन)
१०	समन्वय वेदविद्यालय, हरिद्वार (उत्तरांचल)	०२	१८	शुक्ल यजुर्वेद (माध्यंदिन)
११	स्वामी सत्यमित्रानंद वेदविद्या केंद्र, सूरत (गुजरात)	०१	१२	शुक्ल यजुर्वेद (माध्यंदिन)
१२	योगेश्वर याज्ञवल्क्य वेदविद्या प्रतिष्ठान, सराई (औरंगाबाद– महाराष्ट्र)	०२	२०	शुक्ल यजुर्वेद (माध्यंदिन)
१३	संत ज्ञानेश्वर वेदविद्यालय, वृंदावन (उत्तर प्रदेश)	०२	१९	सामवेद
१४	वे.मू. विश्वनाथ देव गुरुकुल, वाराणसी, (उत्तर प्रदेश)	०१	१८	शुक्ल यजुर्वेद (माध्यंदिन)
१५	श्री ओंकारानंद गायत्री वेदविद्यालय, ऋषिकेश (उत्तरांचल)	०२	२५	शुक्ल यजुर्वेद (माध्यंदिन)
१६	श्री जयेंद्र सरस्वती गुरुकुलम्, सूडी (कर्नाटक)	०१	०३	शुक्ल यजुर्वेद (माध्यंदिन)
१७	आचार्य वेदशास्त्र पाठशाला, परभणी (महाराष्ट्र)	०१	०६	न्याय एवं मीमांसा
१८	महाराजा प्रतापसिंह वेदविद्यालय, जम्मू (जम्मू-कश्मीर)	०१	१७	शुक्ल यजुर्वेद (माध्यंदिन)
१९	मणिपुर वेदविद्यापीठ, चार हजारे (मणिपुर)	०२	१२	शुक्ल यजुर्वेद (माध्यंदिन)
२०	श्री विक्रम विनायक वेदविद्यापीठ, बिर्ला मंदिर (रेवदंडा) (महाराष्ट्र)	०२	२३	शुक्ल यजुर्वेद (माध्यंदिन)
२१	प्रकाशानंद वेदविद्यालय कनखल (उत्तराखंड)	०१	१५	शुक्ल यजुर्वेद (माध्यंदिन)
२२	श्रुती-स्मृति वेदविद्यज्ञापीठम् त्र्यंकेश्वर (महाराष्ट्र)	०१	२०	शुक्ल यजुर्वेद (माध्यंदिन)
२३	संत गुलाबराव महाराज वैदिक महाविद्यालय, आलंदी (महाराष्ट्र)	०३	०७	शुक्ल यजुर्वेद (माध्यंदिन)
	कुल	४२	४९३	

* शुक्ल यजुर्वेद माध्यंदिन, शुक्ल यजुर्वेद काण्व, कृष्ण यजुर्वेद तैत्तिरीय, अथर्ववेद शौनक, सामवेद राणायणी शाखा, (श्री समर्थ संत महात्माजी वेदविद्यालय, ढालेगांव (महाराष्ट्र)) ** ऋग्वेद शाकल, सामवेद राणायणी, अथर्ववेद शौनक (श्री चतुर्वेदेश्वर धाम, सावरगांव (महाराष्ट्र))

* सभी वेदविद्यालयों में प्रतिष्ठान द्वारा निर्धारित पाठ्यक्रम के अनुसार वेदाध्ययन कराया जाता है।

(४) महर्षि सांदीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन से प्राप्त अनुदान :-

इस संस्था की योजना के अंतर्गत आलंदी, ढालेगांव तथा सावरगांव वेदविद्यालयों हेतू पूर्ण तथा पुष्कर, कोलकाता, हरिद्वार, वाराणसी, ऋषिकेश, जम्मू, तथा मणिपुर वेद विद्यालयों के लिए छात्रवृत्ति तथा अध्यापक मानधन हेतु अनुदान राशि प्राप्त हुई है।

(५) उद्दिष्टपूर्ति निमित्त व्यय

क्र.	व्यय	रु. (लाखों में)
१)	कार्यालय एवं अन्य व्यय	१३.७१
२)	उद्दिष्टपूर्ति व्यय	१७५.१७

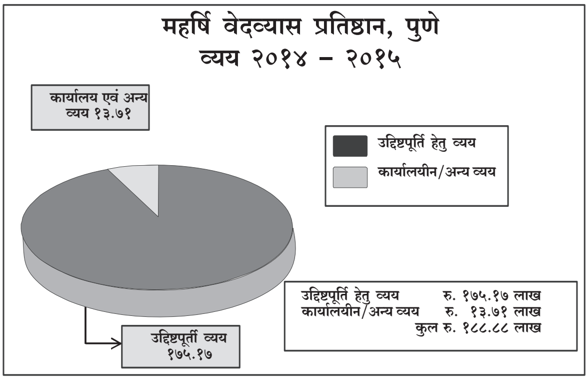

(६) प्रतिष्ठान की विविध योजनाओं में समाज का सहयोग – प्रतिष्ठान को विविध योजनाओं में दिनांक ०१.०४.२०१४ से ३१.०३.२०१५ तक निम्नानुसार सहयोग प्राप्त हुआ।

क्र.	योजना/कोष	प्राप्त राशि (रु. लाखों में)
१)	वेदश्री तपोवन कोष	१४०.०२
२)	माधुकरी दत्तक योजना	८.९७
३)	श्री सद्गुरु निजानंद महाराज वेदविद्यालय आलंदी कोष	१४.८६
४)	संत श्री महात्माजी वेदविद्यालय भवन कोष	०.३१
५)	श्री समर्थ संत महात्माजी वेदविद्यालय ढालेगांव	०.५५
६)	मणिपुर वेदविद्यापीठ, चारहजारे	७.२५
७)	श्री विक्रम विनायक वेदविद्यालय	३.००
८)	वाराणसी वेदविद्यालय	०.३१
९)	ऋषिकुमार	७.०५
१०)	साधारण एवं अन्य अनुदान	१५.५२

धनसंग्रह का मुख्य स्रोत प. पू. आचार्यश्री द्वारा वैदिक संस्कृति रक्षण एवं संवर्धन हेतु आयोजित कथाओं का माध्यम ही रहा है। इन माध्यमों को सफल बनाने में वेदप्रेमी बंधु, कार्यकर्ता एवं समाज का अच्छा योगदान प्राप्त हो रहा है।

(७) धर्मश्री त्रैमासिक प्रकाशन :-

धर्मश्री परिवार का त्रैमासिक वार्तापत्र धर्मश्री नियमित रूप से श्रीकृष्ण सेवानिधि के माध्यम से प्रकाशित हो रहा है। लगभग १४,५०० दानदाता, वेदप्रेमी व्यक्ति एवं प. पू. आचार्यश्री के दीक्षार्थियों को 'धर्मश्री' अंक भेजे जाते हैं।

(८) गुरुपूर्णिमा उत्सव :-

'सत्य' 'तथ्य' एवम् 'विज्ञान' आधारित परंपराओं के अनुसार 'गुरुपूर्णिमा' उत्सव दिनांक १२ जुलाई २०१४ को स्वर्गाश्रम (ऋषिकेश) में प. पू. आचार्यश्री के सान्निध्य में भगवान् वेदव्यासजी का पूजनोत्सव हर्षोल्लास के साथ संपन्न हुआ।

(९) २०१४-२०१५ की महत्त्वपूर्ण घटनाएँ :-

९.१) प्रतिष्ठान का **"रौप्य महोत्सवी"** कार्यक्रम सद्गुरु निजानंद महाराज वेदविद्यालय संतों की पावन नगरी आलंदी में संपन्न होना, अर्थात सत्कर्म का पवित्र भूमि से समागम ही तो है।

९.२) वेदशास्त्र संपन्न श्री. गजाननशास्त्री गोडशे गुरुजी,

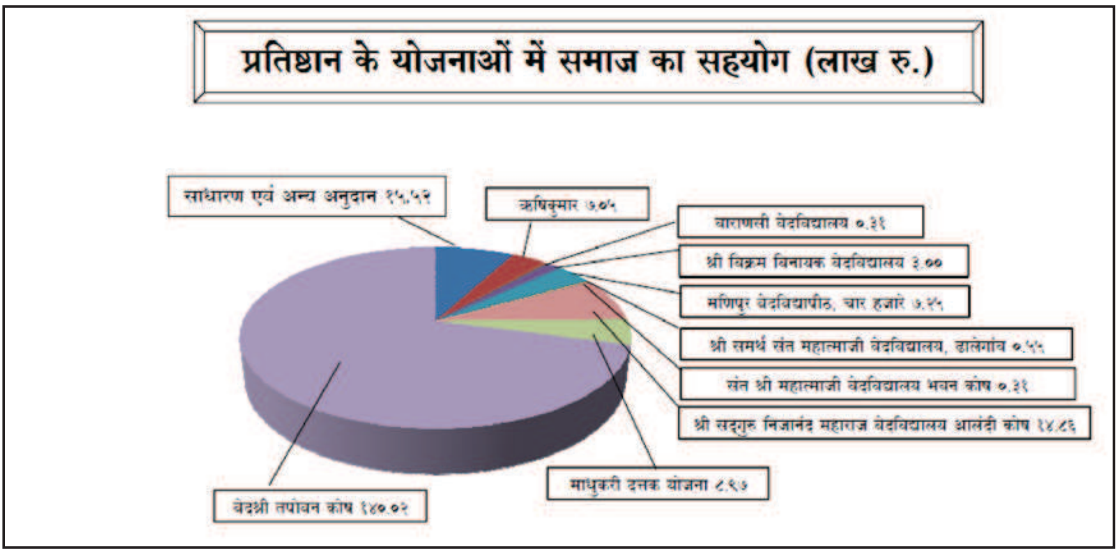

वाराणसी को **महर्षि वेदव्यास पुरस्कार** से सम्मानित किया गया।

९.३) सद्गुरु निजानंद महाराज वेदविद्यालय, आलंदी से **घनांत अध्ययन** पूर्ण करनेवाले ३ घनपाठी छात्रों का घनपाठ पारायण कार्यक्रम आलंदी में संपन्न हुआ। श्री. सुधाकररावजी डिक्कर, जालना द्वारा दी जानेवाली सर्वोत्कृष्ट छात्र पुरस्कार की राशि आलंदी वेदविद्यालय से घनांत अध्ययन पूर्ण करनेवाले तीनों छात्रों को संयुक्त रूप से दी गई।

९.४) आलंदी में प.पू. आचार्यश्री, डॉ. सौ. भाग्यलता पाटसकर, प्रा. दत्तात्रयजी काळे तथा प्रा. चंदशेखरजी गोस्वामी के साथ पूर्वछात्रों संग, महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान की आगामी योजनाओं तथा सहभाग संबंध में सार्थक चर्चासत्र संपन्न होना, छात्रों की अपनी मातृसंस्था के साथ जुड़ा स्नेह–संवेदनशीलता का उत्तम उदाहरण है।

९.५) २० से २२ फरवरी २०१५ के तीन दिवस महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान के इतिहास का स्वर्ण काल...! नई दिल्ली में 'फाऊंडेशन ऑफ वैदिक इंडिया' तथा 'महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान' के संयुक्त संयोजकत्व में **इंटरनेशनल वैदिक कॉन्फ्रेंस** संपन्न हुई। वेदों का अंतर्मूल्य एवम् महत्त्व, विदेशियों के साथ साझा करने के अवसर को हमारी संस्कृति की विस्तीर्ण स्वीकार्यता की दृष्टि से देखा जाना चाहिये।

(१०) सुवर्ण मुद्रा पुरस्कार :-

क्र.	नाम	वेदशाखा	स्थान	अध्यापक
१)	चि. भास्कर देशपांडे	अथर्ववेद	ढालेगाव	वे.मू.श्री. दिनकर जोशी
२)	चि. गोविंद कुलकर्णी	शुक्ल यजु. (काण्व)	ढालेगाव	वे.मू.श्री. भास्कर जोशी
३)	चि. विजय शर्मा	शुक्ल यजु. (माध्यं.)	वाराणसी	वे.मू.श्री. टीकाराम रिजाल

(११) रौप्य महोत्सवी वर्षों के वेदसेवा कार्य :-

इस पवित्र एवं राष्ट्रीय कार्यनिमित्त विगत चौबीस वर्षों में भारत वर्ष के १९ प्रांतों की १३८ से अधिक वेदपाठशालाओं से, ३५७५ से अधिक वैदिक छात्रों से तथा ८३० से अधिक वैदिक पंडितों से कार्यपरिचय हुआ। २० श्रेष्ठ वैदिक विद्वानों को **'महर्षि वेदव्यास पुरस्कार'** से सम्मानित किया गया। वैदिक छात्रवृत्ति, युवा वैदिक परिरक्षण योजना, वृद्ध वैदिक निवृत्ति दक्षिणा तथा वेदविद्यालय अनुदान योजना से प्रत्यक्ष लाभान्वितों का विवरण निम्नानुसार है।

वर्ष	छात्र	लाभान्वित		वेदपाठशालाएं		कुल व्यय रु. (लाखो में)
		अध्यापक	अन्य वैदिक	संलग्न	अनुदानित	
वर्ष १९९१–९२ से २००९–१० तक						६५५.११
वर्ष २०१० – ११	३८१	३४	१८	१९	०४	८९.१०
वर्ष २०११ – १२	४०५	३९	१७	२२	०४	१०२.८८
वर्ष २०१२ – १३	४६९	४४	१७	२२	०४	१०८.४५
वर्ष २०१३ – १४	४९७	४५	१३	२३	०१	१०६.०३
वर्ष २०१४ – १५	४९३	४१	१२	२३	०१	१७०.६२
				कुल व्यय लाख रु.		१२३२.१९

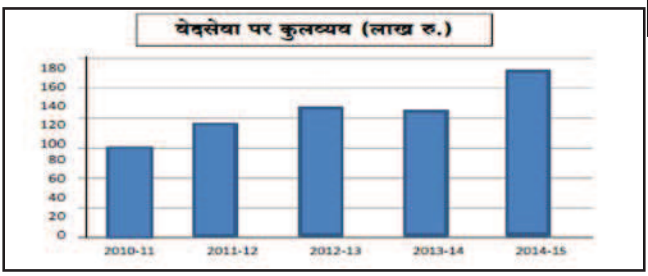

जिसको जीवन में महान बनना है, वो विष पचाना सीखें। – पूज्यपाद

(१२) प्रतिष्ठान की विगत पच्चीस वर्षों की यात्रा में, अपने निर्धारित संकल्पों के अलावा विद्यालय से उत्तीर्ण होनेवाले छात्रों में से मेधावी छात्रों को 'स्वर्ण-मुद्रा पुरस्कार' से प्रतिवर्ष पुरस्कृत कर, प्रतिष्ठान ने कर्तव्यबोध का परिचय दिया है। इस मानस को मद्दे नजर रखते हुए कि वेदाध्ययन के माध्यम से संस्कृति के जतन में इनका योगदान, सदैव बना रहेगा। वेदों के प्रचार का सेतु भी यही विद्यार्थी होंगे.... और प्रसार का माध्यम भी यही छात्र होंगे।

प्रतिष्ठान अपने इस दायित्व को भी विगत पच्चीस वर्षों से पूर्ण करता आ रहा है, जिसमें वेदों के प्रचार-प्रसार हेतु जिन्होंने अपने जीवन-काल का समर्पण दे दिया.... ऐसे महानतम जीव जिनकी धमनियों में रक्त के साथ वेद के प्रचार प्रसार का संकल्प बहता है... ऐसों का सम्मान 'महर्षि वेदव्यास पुरस्कार' से किया है। विगत पच्चीस वर्षों के ऐसे सम्मानितों की सूचि पुन: उल्लेखित करना प्रतिष्ठान का सौभाग्य है।

(१३) धन्यवाद ज्ञापन :-

न्यास की इस वर्ष की संतोषजनक कार्यवृद्धि, अध्यापक, दानदाता, हितचिंतक, सभी समितियों के सदस्यगण, प्रतिष्ठान के न्यासी सदस्य, कार्यकर्ता, कार्यतत्पर कार्यालयीन बंधु तथा सभी कार्यकलापों में विभिन्न रूपों में सहभागी असंख्य भाई-बहनों के सहयोग के कारण ही संभव हो सकी है। इन सभी के प्रति हार्दिक धन्यवाद एवं अभिनंदन!

राजेश मालपाणी
(मंत्री)

पुणे दिनांक: १५ जून २०१५

महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान का हिसाब

आय व्यय पत्रक

दि. १.४.२०१४ से ३१.३.२०१५ तक का

व्यय	रकम	आय	रकम
प्रापर्टी संबंधी व्यय	६,२८०	सावधि जमा राशि पर ब्याज	१,१४,०८,३७८
कार्यालयीन/अन्य व्यय	१३,७१,२८७	साधारण अनुदान	२७,११,८८३
उद्देश्यपूर्ति व्यय	१,७५,१७,०९१	अन्य आय	६,९८५
		आय से व्यय अधिक	४७,६७,४१२
कुल रुपये	**१,८८,९४,६५८**	**कुल रुपये**	**१,८८,९४,६५८**

तुलनपत्रक

दि. ३१ मार्च २०१५ की स्थिति

देयताएं	रकम	पूँजी	रकम
स्थायी कोष	१,६३,०५,७९५	चल/अचल संपत्ति	३,०३,१४,५०९
विशेष कोष	१६,७६,९१,९९९	विनियोग	१३,९८,३८,८८९
नैमित्तिक देयताएं	३,९७,३३९	अग्रिम राशी	५५,२२,२८६
		नकद एवं बैंक बैलेन्स	२४,१५,६१५
		आय व्यय लेखा	६३,०३,८३४
कुल रुपये	**१८,४३,९५,१३३**	**कुल रुपये**	**१८,४३,९५,१३३**

जांचा व सही पाया
मर्दा अँड असोसिएटस् (चार्टर्ड अकाउन्टेन्ट्स)
पी. बी. मर्दा, प्रोप्रायटर

भागीरथ लड्डा (उपाध्यक्ष)
राजेश मालपाणी (मंत्री)
रमेश रामू (कोषाध्यक्ष)

(यह संक्षिप्त कार्यनिवेदन इस अंक में प्रकाशन हेतु बनाया गया है। मूल विस्तृत कार्यनिवेदन प्रतिष्ठान के कार्यालय में उपलब्ध है।)

।। श्रीहरिः ।।

प.पू. स्वामी श्री गोविंददेव गिरिजी महाराज के

* आगामी कार्यक्रम ई. स. २०१५ *

दिनांक	स्थान	कथा
२७-१०-१५ से २८-१०-१५	परभणी (महाराष्ट्र)	व्याख्यानमाला
२९-१०-१५ से ३१-१०-१५	अमरावती (महाराष्ट्र)	गोपालकृष्ण उत्सव
०१-११-१५ से ०८-११-१५	नागपुर (महाराष्ट्र)	भागवत कथा
०९-११-१५ से १३-११-१५	पुणे (महाराष्ट्र)	दीपावली
१६-११-१५ से १८-११-१५	दिल्ली	चतुर्वेद महायज्ञ
१९-११-१५ से २५-११-१५	इन्दौर (मध्य प्रदेश)	भागवत कथा
२७-११-१५ से २९-११-१५	गोवा (महाराष्ट्र)	आचार्य सभा
०१-१२-१५ से ०३-१२-१५	सोलापुर (महाराष्ट्र)	व्याख्यानमाला
०६-१२-१५ से १३-१२-१५	सिंगापुर	जलयात्रा
१५-१२-१५ से १७-१२-१५	मुंबई (महाराष्ट्र)	प्रवचन
१८-१२-१५ से १९-१२-१५	मुंबई (महाराष्ट्र)	कार्यकर्ता शिविर
२१-१२-१५	कुरूक्षेत्र (हरियाणा)	गीता जयंती उत्सव
२४-१२-१५ से २६-१२-१५	दिल्ली	राणी सती उत्सव
२७-१२-१५ से ०२-०१-१६	कोलकाता (प. बंगाल)	भागवत कथा

विशेष स्थिति में कार्यक्रम में परिवर्तन की संभावना रहती है।

संपर्क **:-** धर्मश्री, मानसर अपार्टमेंट्स, पुणे-विद्यापीठ मार्ग, पुणे-४११०१६
कार्यालय दूरभाष :- (020) 25652589, **हनुमान :-** 09420131000
Website : www.dharmashree.org Email : dharmashree123@gmail.com

गुरुपूर्णिमा उत्सव, जिंतुर

दिनांक २६.०७.२०१५ रविवार को जिन्तूर के सभी अनुगृहीतों की ओर से गुरुपूर्णिमा उत्सव मनाया गया। प्रथम दिन दि. २५.०७.२०१५ शनिवार को वैदिक पौरोहित्य पाठशाला, जिंतुर में ''श्री गुलाबगौरव'' ग्रंथ का पारायण किया गया तथा दिनांक २६.०७.२०१५ रविवार को सुबह ८ से १० बजे तक सभी अनुगृहीतों ने महर्षि वेदव्यासजी, ज्ञानेश्वर माउली तथा सद्‌गुरुदेव की प्रतिमा का पूजन किया। तत्पश्चात् आधे घंटे की उपासना की, जिसमें वेदव्यास वंदना, प्रातःस्मरण प्रणवोच्चार, भ्रामरी प्राणायाम, 'ज्ञानेश्वर माउली' का जप, श्रीमदभगवद्‌गीता के अध्याय १२ एवं १५ का पाठ, हनुमान चालीसा आदि संपन्न किये गये।

ठीक १० बजे मुख्य अतिथि डॉ. द्वारकादासजी लड्डा, जयप्रकाशजी बियाणी, ह.भ.प. शिवदास हत्तेकर, महंत कैलाशनाथजी महाराज रामगड़, उटिकर महाराज तथा निवृत्त न्यायाधीश नरवाडे साहब का आगमन हुआ। इन सभी की उपस्थिति में डॉ. द्वारकादासजी लड्डा के करकमलोंद्वारा श्री ज्ञानेश्वर माउली वाचनालय का उद्‌घाटन संपन्न हुआ।